इकाई 4 शिकारी-संग्रहकर्ताः पुरातात्विक परिप्रेक्ष्य, कृषि और पशु पालन का आरम्भ*

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 पुरापाषाण युग

- 4.2.1 पुरापाषाण युग के औज़ार
- 4.2.2 पुरापाषाण युग की बस्तियाँ
- 4.2.3 जीवन यापन के तरीके

4.3 मध्य पाषाण युग

- 4.3.1 मध्य पाषाण युग के औज़ार
- 4.3.2 मध्य पाषाण युग की बस्तियाँ
- 4.3.3 जीवन यापन के तरीके

4.4 संस्कृति का नवपाषाण चरण

4.5 सबसे प्राचीन किसान

- 4.5.1 नील घाटी
- 4.5.2 पश्चिम एशिया के प्रारम्भिक किसान

4.6 भारतीय उपमहाद्वीप के प्राचीन किसान

- 4.6.1 उत्तर पश्चिमी क्षेत्र
- 4.6.2 कश्मीर घाटी की नवपाषाण संस्कृति
- 4.6.3 बेलान घाटी के प्राचीन किसान
- 4.6.4 बिहार/मध्य गंगा घाटी की नवपाषाण संस्कृति
- 4.6.5 पूर्वी भारत के प्रारम्भिक किसान
- 4.6.6 दक्षिण भारत के प्रारम्भिक किसान
- 4.6.7 ऊपरी, मध्य और पश्चिमी दक्कन की नवपाषाण संस्कृति

4.7 सारांश

4.8 शब्दावली

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.10 संदर्भ ग्रंथ

4.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- प्रागैतिहासिक काल की शिकारी-संग्रहकर्त्ता अवस्था के विषय में जानकारी प्राप्त करने के विभिन्न तरीकों को समझ सकेंगे;
- उन पुरातात्विक प्रमाणों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे जिनसे उनके इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायता मिलती है;

* यह इकाई ई.एच.आई.-02, खंड-1 से ली गई है।

- इस काल के लोगों के जीवन यापन के तरीकों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- उन औज़ारों के बारे में जान सकेंगे जिनका वे उपयोग करते थे। इसके अलावा इस बात की भी जानकारी मिल सकेगी कि प्रागैतिहासिक कला उनके संगठन के विषय में जानने में कितना सहयोग प्रदान कर सकती है।

इस इकाई में धातुओं का उपयोग होने के चरण से पहले कृषि के प्रारम्भ और पशुओं को पालने की शुरुआत पर भी विचार किया गया है। अनाजों की खेती और कृषि के विकास से यायावर शिकारी/संग्राहत स्थानबद्ध कृषक बन गया। इससे गांव की बस्तियों की और नए प्रकार के उपकरणों के विनिर्माण की शुरुआत हुई। मानव के विकास के इस चरण को नवपाषाण चरण कहा गया है। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप निम्नलिखित के विषय में भी सीख सकेंगे :

- संस्कृति के नवपाषाण चरण के विशिष्ट लक्षण;
- नए प्रकार के पत्थर के औज़ारों, उगाए गए पौधों आदि के रूप में पुरातात्विक साक्ष्य जिनसे कृषि की शुरुआत प्रदर्शित होती है;
- पश्चिम एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के स्वरूप, और
- भारतीय उपमहाद्वीप के अलग-अलग क्षेत्रों में उगाई विभिन्न फसलें।

4.1 प्रस्तावना

आज इक्कीसवीं शताब्दी में हमें यह जानकर आश्चर्य होगा कि मनुष्य जाति ने अपने अस्तित्व के आरम्भ से लेकर आज तक का 99 प्रतिशत हिस्सा शिकारी/संग्रहकर्ता के रूप में बिताया है। कहने को तात्पर्य यह है कि मनुष्य ने मात्र 10,000 वर्ष पूर्व कृषि द्वारा उत्पादन करना सीखा। इससे पहले वह पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर था। अपने भोजन के लिए या तो वे प्रकृति से जड़ें, फल मूल आदि एकत्र करते थे या पक्षियों, जानवरों और मछलियों को पकड़कर अपना भोजन जुटाते थे। अपने अस्तित्व के अधिकांश कालों में मनुष्य प्रकृति और पर्यावरण पर पूर्णतः आश्रित रहा। इस तथ्य से कई बातें सामने आती हैं। एक तो यह कि उनके भोजन प्राप्त करने के तरीकों का प्रभाव उनके प्रकृति से संबंध और प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण पर पड़ा। दूसरी यह कि शिकारी/संग्रहकर्ता एक समूह में रहते थे और इसका संबंध उनके द्वारा भोजन जुटाने की पद्धति से है। यहां एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि अन्य समूहों की अपेक्षा शिकारी/संग्रहकर्ता समूहों की बनावट कहीं ज्यादा लचीली थी।

मनुष्य काफी अरसे तक शिकारी/संग्रहकर्ता का जीवन बिताता रहा। इसलिए इस काल के मानव इतिहास को जानना जरूरी है। विश्व में ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जहां आज भी लोग शिकारी/संग्रहकर्ता का जीवन जी रहे हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि मानव इतिहास में हुए सांस्कृतिक बदलावों के साथ-साथ हम उनकी संस्कृति के बारे में भी जानकारी हासिल करें। पर हम शिकारी/संग्रहकर्त्ताओं के बारे में जानेंगे कैसे? शिकारी/संग्रहकर्त्ताओं के रहने के ढ़ंग, उनके सामाजिक संगठन और उनके पर्यावरण आदि विभिन्न पहलुओं पर कई मानव जाति वैज्ञानिकों/मानवेताओं ने प्रकाश डाला है। इन्होंने जीवित शिकारी/संग्रहकर्ता समूहों का अध्ययन किया है। इनके कार्यों से अतीत के शिकारी/संग्रहकर्ता समुदायों की जीवन पद्धति और स्थिति को जानने की अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है। इन समुदायों के बारे में जानने के लिए हमें उन पुरात्तववेताओं और अन्य वैज्ञानिकों की सहायता लेनी पड़ती है जो उन समुदाय विशेष के औज़ारों, हड्डियों के अवशेषों और पर्यावरण विशेष के विशेषज्ञ होते हैं। इस प्रकार के अध्ययन के लिए कई प्रकार के शैक्षणिक संकायों का सहारा लेना पड़ता है। उनके जीवन को जानने के लिए कई प्रकार के साक्ष्यों जैसे जानवरों के अवशेष, पौधे और अन्य जैव अवशेषों का अध्ययन करना पड़ता है और उनका संबंध शिकारी/संग्रहकर्त्ता

अवस्था से जोड़ना पड़ता है और इनसे आदि मानव के तत्कालीन भौतिक पर्यावरण को जानने और इसके उपयोग को समझने की अंतर्दृष्टि मिलती है।

शिकारी/संग्रहकर्त्ताओं द्वारा उपयोग में लाए गए पत्थर के औज़ार पाए गए हैं। उन औज़ारों को इनके प्रकार तथा काल के अनुसार मध्यपाषाणीय, पुरापाषाणीय आदि वर्गों में विभाजित किया गया है। इन औज़ारों के बनाने के तकनीक पर भी पुरातत्ववेता विचार करते हैं। पशुओं के अवशेषों के अध्ययन से इस बात की जानकारी मिलती है कि प्रागैतिहासिक काल में उनका किस प्रकार उपयोग किया जाता था। पत्थर पर की गयी खुदाई और चित्रकारी से भी प्रागैतिहासिक काल के लोगों की अर्थव्यवस्था और समाज का पता चलता है।

4.2 पुरापाषाण युग

पुरापाषाण संस्कृति का उदय अभिनूतन (Pleistocene) युग में हुआ था। अभिनूतन युग (20 लाख वर्ष पूर्व) एक भूवैज्ञानिक काल है जिसमें हिम युग अपने अन्तिम चरण में था। इस युग में धरती बर्फ से ढकी हुई थी। पुरापाषाण युग के पत्थर के औज़ारों के वर्गीकरण के संबंध में भारत के पुरातत्ववेत्ताओं के बीच मतभेद हैं:

- कुछ विद्वान धारदार ब्लेड (Blade) और लक्षणों वाले काल को ''उच्च पुरापाषाण'' कहते हैं।
- कुछ विद्वान उच्च पुरापाषाण को यूरोपीय पुरापाषाण संस्कृति से जोड़ते हैं। पर अब उच्च पुरापाषाण का प्रयोग भारतीय संदर्भ में भी होता है।

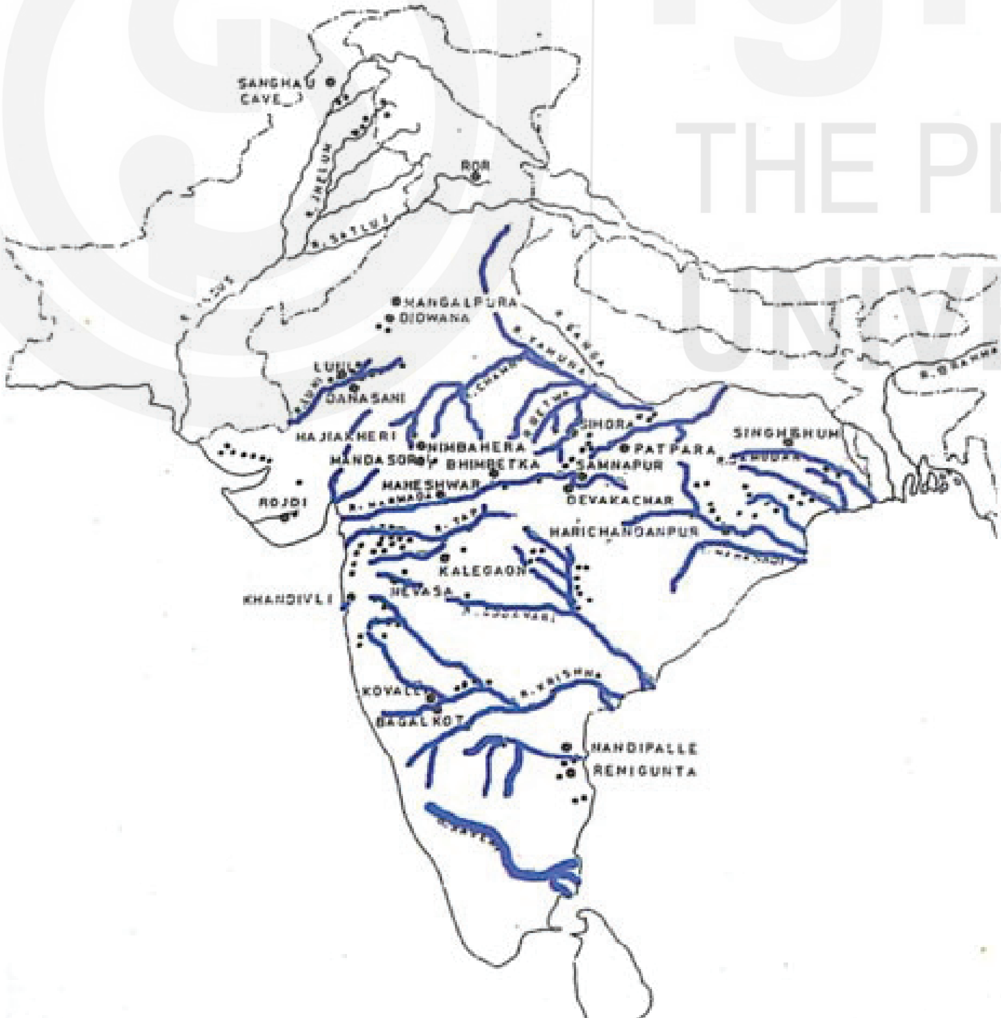

मध्य पुरापाषाण युगीन बस्तियाँ (श्रेयः वी.एन.मिश्रा, 1989)। स्रोतः एम.एच.आई.-08, खंड-2, इकाई-5।

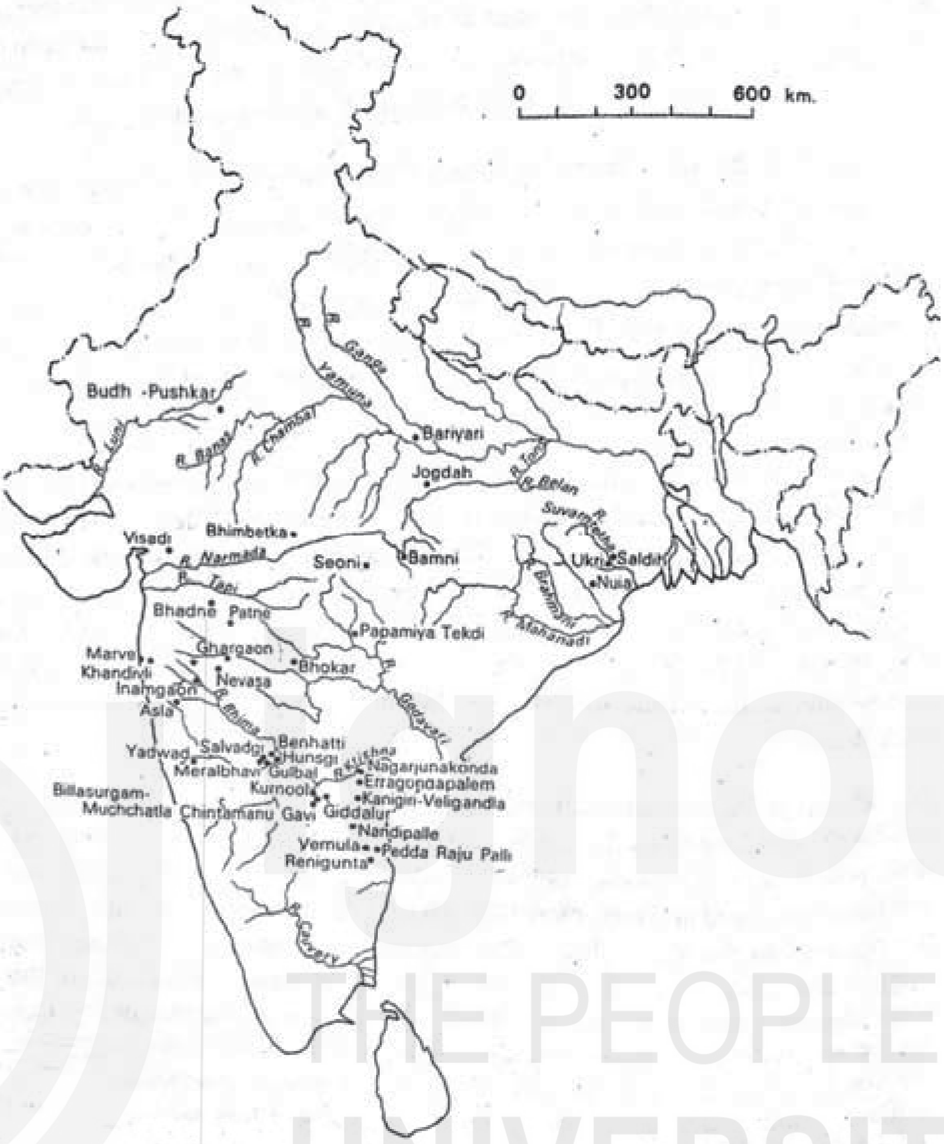

भारत में उच्च पुरापाषाण युगीन बस्तियों का विस्तार। स्रोतः एम.ए.एन.-002, खंड-5, इकाई-3।

4.2.1 पुरापाषाण युग के औज़ार

पर्यावरण और जलवायु में हुए परिवर्तन और मनुष्य द्वारा बनाए गए पत्थर के औज़ारों की प्रकृति के आधार पर पुरापाषाण संस्कृति को तीन चरणों में बांटा गया है।

- निम्न पुरापाषाण चरण के औज़ारों में मुख्यतः हाथ की कुल्हाड़ी, तक्षणी, काटने का औज़ार आदि हैं।
- मध्य पुरापाषाण युगीन उद्योग काटने के औज़ारों पर आधारित था, और
- उच्च पुरापाषाण युग की विशेषता थी – तक्षणी और खुरचनी।

अब हम इस काल के कुछ औज़ारों और उनके उपयोग के बारे में चर्चा करेंगे।

- हाथ की कुल्हाड़ी (Handaxe) – इसका मूठ चौड़ा और आगे का हिस्सा पतला होता है। इसका उपयोग काटने या खोदने के लिए होता होगा।
- चीरने का औज़ार (Cleaver) – इसमें दुहरी धार होती है। इसका उपयोग पेड़ों को काटने और चीरने के लिए होता था।

- काटने के औज़ार (Chopper) – एक बड़ा स्थूल औज़ार जिसमें एक तरफा धार होती है और इसका उपयोग काटने के लिए किया जाता था।
- काटने का औज़ार (Chopping tool) – यह भी चौपर के समान एक बड़ा स्थूल औज़ार है पर इसमें दुहरी धार होती है और इसमें कई पट्टे होते हैं। इसका उपयोग भी किसी चीज को काटने के लिए होता था पर अधिक नुकीली धार वाला होने से यह चौपर से अधिक कारगर होता था।
- परत (Flake) – यह एक प्रकार का औज़ार होता है जिसे पत्थर को तोड़कर बनाया जाता है परत की सतह पर सकारात्मक समाघात और इसके सारभाग में एक नकारात्मक समाघात (Negative bulb of percussion) होता है। जिस स्थान पर पत्थर के हथौड़े से चोट की जाती है उसे समाघात स्थल कहते हैं। इस चोट से जो गोल, हल्का उत्तल हिस्सा कट कर निकलता है उसे सकारात्मक समाघात कहते हैं। इस चोट के परिणामस्वरूप सारभाग का जो हिस्सा अवतल हो जाता है उसे नकारात्मक समाघात कहते हैं। परत बनाने की कुछ तकनीकें हैंः फ्री फ्लेकिंग तकनीक, स्टेप फ्लेकिंग तकनीक, ब्लॉक आन ब्लॉक तकनीक, द्विध्रुवीय तकनीक आदि।
- खुरचनी (Side scraper) – इसमें एक पत्तर या ब्लेड होता है और इसका किनारा धारदार होता है। इसका उपयोग पेड़ की खाल या जानवरों का चमड़ा उतारने में किया जाता होगा।
- तक्षणी (Burin) – यह भी पत्तर या ब्लेड के समान ही होता है, पर इसका किनारा दो तलों के मिलने से बनता है। तक्षणी के काम वाले हिस्से की लम्बाई 2-3 से.मी. से अधिक नहीं होती है। इसका उपयोग मुलायम पत्थरों, हड्डियों, कोरों या गुफाओं की दीवारों पर नक्काशी के लिए होता होगा।

पुरापाषाण युग के औज़ारः A) चीरने के औज़ार, B) काटने के औज़ार, C) काटने के औज़ार, D) खुरचनियाँ, E) तक्षणी, F) परत। स्रोतः ई.एच.आई.-02, खंड-1, इकाई-3।

4.2.2 पुरापाषाण युग की बस्तियाँ

अब हम पढ़ेंगे कि शिकारी/संग्रहकर्ताओं द्वारा प्रयुक्त औज़ार पुरातत्ववेताओं को किन-किन

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

क्षेत्रों में मिले हैं। इन औज़ारों के क्षेत्रीय फैलाव के बारे में पता चलने पर न केवल हमें शिकारी/संग्रहकर्ताओं के निवास स्थलों का पता चलेगा, बल्कि उस पर्यावरण की भी जानकारी मिलेगी जिसमें वे रहते थे।

विभिन्न क्षेत्रों में इनका अध्ययन करें :

i) कश्मीर घाटी दक्षिण पश्चिम में पीर पंजाल पहाड़ियों और उतर पूर्व हिमालय से घिरी है। कश्मीर में लिद्दर नदी के किनारे पहलगांव से एक हाथ की कुल्हाड़ी प्राप्त हुई थी। किन्तु पुरापाषाण युग के औज़ार कश्मीर में ज्यादा नहीं मिलते क्योंकि हिम युग में कश्मीर में अत्यधिक ठंड होती थी। पोतवार क्षेत्र (आज का पश्चिमी पंजाब और पाकिस्तान) पीर पंजल और साल्ट पर्वत श्रृंखला के बीच में पड़ता है। इस इलाके में विवर्तनिक बदलाव आया था और इस क्रम में सिंधु और सोहन नदियों की उत्पत्ति हुई थी। सोहन घाटी में हाथ की कुल्हाड़ी और काटने के औज़ार मिले हैं। ये औज़ार अड़ियाल, बलवाल और चौन्टरा जैसी महत्वपूर्ण पुरापाषाणीय बस्तियों में पाये गए हैं। ब्यास, बाणगंगा और सिरसा नदियों के किनारे भी पुरापाषाण युग के औज़ार पाए गए हैं।

ii) लूनी नदी (राजस्थान) के आसपास के क्षेत्र में कई पुरापाषाण युगीन बस्तियाँ पाई गई हैं। लूनी नदी का उद्गम अरावली क्षेत्र में हुआ था। चितौढ़गढ़ (गंभीर नदी घाटी) कोटा (चंबल नदी घाटी) और नगरई (बेराच नदी घाटी) में पुरापाषाण युग के औज़ार पाए गए हैं। मेवाड़ की वगांव और कदमली नदियों के आसपास भी मध्य पुरापाषाण युगीन बस्तियाँ पाई गई हैं। इन इलाकों से कई प्रकर की खुरचनी, बेधक औज़ार और नुकीले औज़ार भी पाए गए हैं।

iii) गुजरात में साबरमती, माही और उनकी सहायक नदियों के आसपास पुरापाषाण युग के अनेक औज़ार पाए गए हैं। साबरमती नदी अरावली से निकल कर खम्बात की खाड़ी में जा गिरती है। ओरसंग घाटी के नजदीक भंडारपुर में भी मध्य पुरापाषाण युग के औज़ार पाए गए हैं। सौराष्ट्र में भद्दर नदी के आसपास पुरापाषाण युग के अनेक औज़ार मिले हैं जैसे हाथ की कुल्हाड़ियाँ, खुरचनी, काटने के औज़ार, नुकीले औज़ार, बेधक औज़ार आदि। कच्छ क्षेत्र में भी पुरापाषाण युग के अनेक औज़ार मिले हैं जैसे – खुरचनी, हाथ की कुल्हाड़ी और काटने के औज़ार।

iv) नर्मदा नदी मैकॉल पर्वत श्रृंखला से निकलती है और खम्बात की खाड़ी में जाकर मिल जाती है। नर्मदा के समतलों में पुरापाषाण युग के अनेक औज़ार पाए गए हैं, जैसे हाथ की कुल्हाड़ियां और चीरने के औज़ार। विंध्य क्षेत्र में अवस्थित भीमबेटका (भोपाल के निकट) में पहले एश्यूलियन (Acheulian) संस्कृति के औज़ार उपयोग में लाए जाते थे किंतु वहां बाद में मध्य पुरापाषाण युगीन संस्कृति का आगमन हुआ।

भीमबेटका में पूर्व-ऐतिहासिक शिलाश्रय। ए.एस.आई. स्मारक संख्या एन.-एम.पी. 225। श्रेयः डॉ. अभिषेक आनन्द।

जानवरों के प्रचुर चित्रण के कारण इस गुफा को चिड़ियाघर शिलाश्रय कहा जाता है। श्रेयः डॉ. अभिषेक आनन्द।

v) ताप्ती, गोदावरी, भीमा और कृष्णा नदियों के आसपास भी कई पुरापाषाण युग की बस्तियाँ पाई गई हैं। पुरापाषाण युग की बस्तियाँ की उपस्थिति का संबंध पर्यावरण संबंधी बदलाव से भी है जैसे भू-स्खलन, मिट्टी की प्रकृति आदि। ताप्ती की तलहटी में काफी गहराई तक *रेगुर* काली मिट्टी पाई जाती है। भीमा और कृष्णा नदियों के ऊपरी हिस्से के आसपास के क्षेत्रों में कम पुरापाषाणीय बस्तियाँ पाई गई हैं। महाराष्ट्र में नवासा के नजदीक चिरकी में हाथ की कुल्हाड़ियां, काटने के औज़ार, बेधक औज़ार, खुरचनी और मिट्टी तोड़ने के औज़ार पाए गए हैं। महाराष्ट्र में कोरेगांव, चन्दौली और शिकारपुर पुरापाषाण युग की अन्य प्रमुख बस्तियाँ हैं।

vi) पूर्वी भारत में रोरो नदी (सिंहभूम, बिहार) में भी हाथ की कुल्हाड़ियां, काटने के औज़ार, पत्तर आदि अनेक पुरापाषाण युग के औज़ार पाए गए हैं। सिंहभूम में भी बहुत सी पुरापाषाण युग की बस्तियाँ मिली है। इन बस्तियाँ में मुख्यतः हाथ की कुल्हाड़ियां और काटने के औज़ार पाए गए हैं। दामोदर और सु*वर्णरे*खा नदियों की घाटी से भी पुरापाषाण युग के औज़ारों के पाए जाने की सूचना मिली है। यहां भी पुरापाषाणीय संस्कृति की उपस्थिति स्थलाकृतिक विशेषताओं से प्रभावित हुई है। उडीशा में वैतरनी, ब्राहमणी और महानदी के डेल्टा क्षेत्र में भी पुरापाषाण युग के कुछ औज़ार पाए गए हैं।

उडीशा में मयूरभंज में बुहार बलंग घाटी में प्रारंभिक और मध्य पुरापाषाण युग के कई औज़ार पाए गए हैं जैसे हाथ की कुल्हाड़ियां, खुरचनी, नुकीले औज़ार और पत्तर।

vii) मालप्रभा, घाटप्रभा और कृष्णा की सहायक नदियों के आसपास पुरापाषाण युग की कई बस्तियाँ पाई गई हैं। घाटप्रभा नदी घाटी में एश्यूलियन (Acheulion) हाथ की कुल्हाड़ियां काफी संख्या में पाई गई हैं। अनगवाडी और बागलकोट घाटप्रभा नदी के पास स्थित दो बस्तियाँ है जहां प्रारंभिक और मध्य पुरापाषाण युग के औज़ार पाए गए हैं। तमिलनाडु में पलर, पेनियार और कावेरी में भी पुरापाषाण युग के अनेक औज़ार पाए गए हैं। अतिरमपक्कम और गुड्डियम में प्रारंभिक और मध्य पुरापाषाण युगीन औज़ार पाए गए है जैसे हाथ की कुल्हाड़ियां, खुरचनी, पत्तर, ब्लेड आदि।

4.2.3 जीवय यापन के तरीके

पुरापाषाण युग की बस्तियों में भारतीय और विदेशी मूल के जानवरों के अवशेष काफी मात्रा

में पाए गए हैं। नर वानर, जिराफ, कस्तूरी मृग, बकरी, भैंसा, गाय और सुअर स्वदेशी मूल के पशु प्रतीत होते हैं। ऊँट और घोड़े से उत्तरी अमरीका से संबंध का पता चलता है। दरियाई घोड़ा और हाथी मध्य अफ्रीका से भारत आये थे। ये हिमालय की पूर्वी और पश्चिमी सीमा से होकर आये होंगे। अधिकांश जानवर भारत की उत्तर पश्चिमी सीमा से होकर आये। उस समय अफ्रीका और भारत के बीच काफी आदान-प्रदान होता था।

पुरापाषाण युग के मनुष्य भोजन के लिए किन स्रोतों पर निर्भर करते थे? इस बारे में जानकारी जानवरों के अवशेषों से मिलती है। इन अवशेषों से पता चलता है कि लोग शिकारी और संग्रहकर्ता अवस्था में थे। एक इलाके के रहने वाले मनुष्यों और पशुओं की संख्या के बीच संतुलन रहा होगा। उस समय के लोगों ने आसपास पाये जाने वाले पशुओं और वानस्पतिक संसाधनों का भोजन के रूप में उपयोग किया होगा। मनुष्य छोटे और मध्यम आकार के जानवरों विशेषतः खुरों वाले पशुओं का शिकार करता होगा। साथ ही वह हिरण, गैंडे और हाथी का भी शिकार करता होगा। इस काल में किसी खास प्रकार की शिकारी प्रवृति का पता नहीं चलता है। कहीं-कहीं कुछ विशेष प्रकार के जानवरों के अवशेष बहुतायत में पाए गए, लेकिन इसका कारण यह है कि उस इलाके में उन विशेष जानवरों की बहुतायत थी और उनका शिकार करना आसान था। ऐसा लगता है कि शिकारी/संग्रहकर्ताओं द्वारा पशुओं और पेड़ों को भोजन के रूप में इस्तेमाल करना काफी हद तक शुष्क/आद्र ऋतुचक्र पर आधारित था। पुरापाषाण युग के लोग मुख्य रूप से बैल, गवल, नीलगाय, भैंसा, चिंकारा, हिरण, बारहसिंगे, साम्भर, जंगली सुअर, कई तरह के पक्षियों, कुछओं, मछलियों, मधु और फलदायक पौधों के फलों, मूल, बीज और पत्तों को भोजन के रूप में इस्तेमाल करते थे।

यह कहा जाता है कि आज के वर्तमान शिकारी/संग्रहकर्ताओं द्वारा शिकार किए जाने वाले जानवरों से अधिक महत्व शिकारी/संग्रहकर्ताओं द्वारा संग्रहित भोजन का है। संग्रहित भोजन के अवशेष शिकार के अवशेषों की तुलना में अधिक समय तक सुरक्षित रहते हैं। पुरापाषाण युग के लोगों की खाने-पीने की आदतों के बारे में पता लगाना मुश्किल है। ये लोग किस प्रकार के पौधों या फलों का भोजन के रूप में इस्तेमाल करते थे इस बारे में हमें उस प्रकार की जानकारी उपलब्ध नहीं है जैसी कि आजकल के शिकारी/संग्रहकर्ता समूहों के बारे में उपलब्ध है। यह मुमकिन है कि पुरापाषाण युग के लोग पशुओं के साथ-साथ फल-फूल को भी भोजन के रूप में इस्तेमाल करते होंगे।

पत्थर पर की गई चित्रकारी और खुदाई से भी हमें पुरापाषाण युग के लोगों के रहन-सहन और सामाजिक जीवन के बारे में पता चलता है। सबसे पुरानी चित्रकारी उत्तर पुरापाषाण युग की है। विन्ध्य क्षेत्र में स्थित भीमबेटका में विभिन्न कालों की चित्रकारी देखने को मिलती है। प्रथम काल में उतर पुरापाषाण युग की चित्रकारी में हरे और गहरे लाल रंग का उपयोग हुआ है। इन चित्रों में भैंसे, हाथी, बाघ, गैंडे और सुअर के चित्र प्रमुख हैं। ये चित्र काफी बड़े हैं और 2 से 3 मीटर तक है। पुरापाषाण युग के लोगों के शिकारी जीवन की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के जानवरों के कितने और किन रूपों में चित्र मिले हैं इसका बारीकी से अध्ययन करना होगा। खुदाई और चित्रकारी से पता चलता है कि शिकार ही जीवन यापन का मुख्य साधन था। इन चित्रों में बनी शारीरिक संरचना के आधार पर पुरूष और स्त्री में सरलता से भेद किया जा सकता है। इन चित्रों से यह भी पता चलता है कि पुरापाषाण युग के लोग छोटे-छोटे समूहों में रहते थे और उनका जीवन निर्वाह पशुओं और पेड़ पौधों पर निर्भर था।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी :निम्नलिखित प्रश्नों को सावधानी से पढ़ें और सही तथा सबसे उपयुक्त उत्तर पर निशान लगायें।

1) सामाजिक विकास का कौन सा काल शिकारी/संग्रहकर्ता चरण का प्रतिनिधित्व करता है:

क) पुरापाषाण युग

ख) मध्य पुरापाषाण युग

ग) पुरापाषाण और मध्य पाषाण युग

घ) नवपाषाण युग

2) प्रागैतिहासिक शिकारी/संग्रहकर्ता समाज का अध्ययन कैसे किया जाता है?

क) लिखित स्रोतों की सहायता से

ख) मुद्रा विषयक स्रोतों की सहायता से

ग) शिलालेख स्रोतों की सहायता से

घ) पुरातत्व अवशेषों की सहायता से

3) अभिनूतन (Pleistocene) युगः

क) बहुत ठंडा था।

ख) बहुत गर्म था।

ग) तापक्रम सामान्य था।

घ) बहुत सूखा था।

4) पुरापाषाण संस्कृति को तीन चरणों में निम्नलिखित में से किस आधार पर विभाजित करते हैं:

क) जलवायु में परिवर्तन

ख) पत्थर के औज़ारों के प्रकार

ग) पशु-पक्षी अवशेष

घ) पत्थर के औज़ारों के प्रकार, मौसम में परिवर्तन और पशु-पक्षी अवशेष

5) पुरापाषाण युग की अर्थव्यवस्थाः

क) भोजन उत्पादन पर आधारित थी।

ख) शिकार पर आधारित थी।

ग) जंगली पौधों से प्राप्त कंदमूल फल के संग्रह पर आधारित थी।

घ) जानवरों के शिकार और जंगली पौधों से प्राप्त कंदमूल फल के संग्रह पर आधारित थी।

4.3 मध्य पाषाण युग

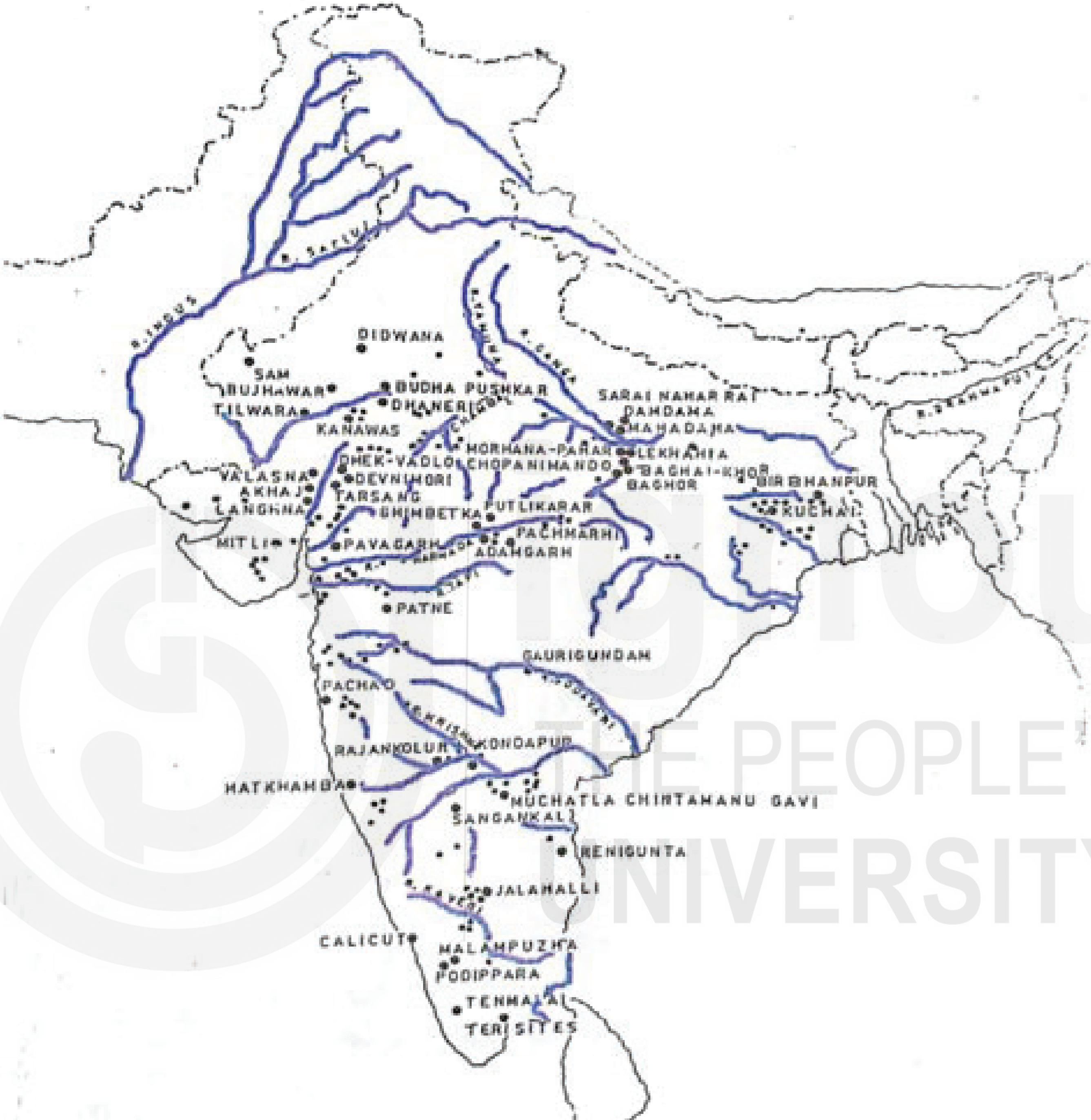

भारत में मध्य पाषाण युगीन बस्तियाँ। श्रेयः वी.एन.मिश्रा, 1989। स्रोतः एम.एच.आई.-08, खंड-2, इकाई-5।

4.3 मध्य पाषाण युग

मध्य पाषाण युग का आरम्भ बी.सी.ई 8000 के आसपास हुआ। यह पुरापाषाण और नव पुरापाषाण युग के बीच का संक्रमण काल है। धीरे-धीरे तापक्रम बढ़ा और मौसम गरम और सूखा होने लगा। परिवर्तन से मनुष्य का जीवन प्रभावित हुआ। पशु-पक्षी तथा पेड़-पौधों की किस्मों या प्रजातियों में भी परिवर्तन आया। औज़ार बनाने की तकनीक में परिवर्तन हुआ और छोटे पत्थरों का उपयोग किया जाने लगा। मनुष्य मूलतः शिकारी-संग्रहकर्ता ही रहा, पर शिकार करने की तकनीक में परिवर्तन हो गया। अब न केवल बड़े बल्कि छोटे जानवरों का

भी शिकार करने लगा। मछलियाँ पकड़ने लगा और पक्षियों का भी शिकार करने लगा। यह भौतिक और पारिस्थितिकी परिवर्तन पत्थर पर हुई चित्रकारी से भी प्रतिबिम्बित होता है। अब हम इस युग में उपयोग में लाए जाने वाले कुछ औज़ारों की चर्चा करेंगे।

4.3.1 मध्य पाषाण युग के औज़ार

मध्य पाषाण युग के औज़ार छोटे पत्थरों से बने हुए हैं। ये सूक्ष्म औज़ार आकार में काफी छोटे हैं और इनकी लम्बाई 1 से 8 से. मी. तक है। कुछ सूक्ष्म औज़ारों का आकार ज्यामितीय होता है। ब्लेड, कोर, नुकीले, त्रिकोण, नवचन्द्राकार और कई अन्य प्रकार के औज़ार मध्य पाषाण काल में उपयोग में लाए जाने वाले मुख्य ज्यामितीय औज़ार हैं। इनके अलावा इस काल में पुरापाषाण युग के औज़ार जैसे तक्षणा, खुरचनी और यहां तक कि गंडासा भी मिलते हैं।

i) **ब्लेड (Blade)**: यह एक प्रकार का विशेषीकृत परत होता है। इसकी लम्बाई इसकी चौड़ाई से दुगनी होती है। इनका उपयोग संभवतः काटने के लिए किया जाता होगा। मध्य पाषाण युग में औज़ार बनाने की तकनीक को फ्लूटिंग (Fluting) कहा जाता है। इसमें सार मात्र पर प्लेटफार्म के नुकीले सिरे से प्रहार किया जाता है। हमें कुछ धारदार ब्लेड भी मिले हैं। ये चौड़े, मोटे और लंबे होते हैं। ब्लेड को धार देने से उसमें पैनापन आता है। कुछ ऐसे ब्लेड पाए गए हैं जिनके एक या दोनों सिरे धारदार होते हैं अन्यथा दोनों किनारे धारदार होते हैं। ये ब्लेड साधारण ब्लेडों से कहीं अधिक पैने तथा कारगर होते हैं।

ii) **कोर (Core)**: कोर साधारणतया आकार में बेलनाकार होता है जिसकी पूरी लंबाई में फ्लूटिंग के निशान होते हैं और इसमें एक सपाट प्लेटफार्म होता है।

iii) **नुकीला औज़ार (Point)**: नुकीला औज़ार एक प्रकार का टूटा तिकोना ब्लेड होता है। इसके दोनों सिरे ढलवां तथा धारदार होते हैं। इसके सिरे सरल रेखीय या वक्र रेखीय भी हो सकते हैं।

iv) **त्रिकोण (Triangle)**: इसमें साधारणतः एक सिरा और एक आधार होता है और सिरे को धारदार बनाया जाता है। इसका उपयोग काटने के लिए किया जाता है या इसे तीर के अग्र भाग में भी लगाया जाता है।

v) **नवचन्द्राकार (Lunate)**: नवचन्द्राकर औज़ार भी एक तरह का ब्लेड होता है लेकिन इसका एक सिरा वृत्ताकार होता है। यह एक वृत्त के हिस्से के समान मालूम होता है। इनका उपयोग अवतल कटाई के लिए किया जा सकता था या ऐसे दो औज़ारों को मिलाकर तीर का अग्रभाग तैयार किया जा सकता था।

परिष्कृत किया हुआ ब्लेड

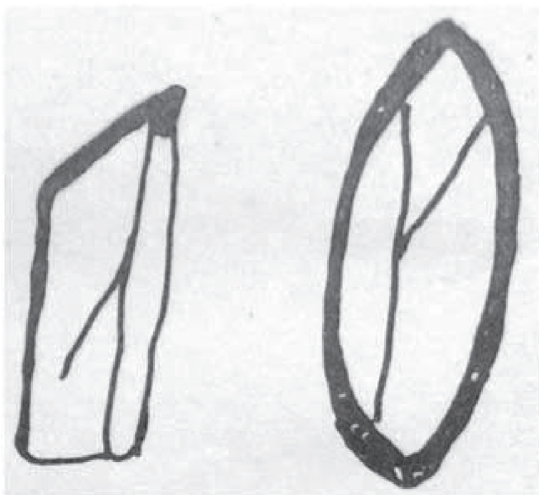

नुकीले औज़ार

vi) **समलम्ब औज़ार (Trapeze)**: यह भी एक ब्लेड के समान ही दिखाई पड़ता है। इसके एक से अधिक सिरे धारदार होते हैं। किसी-किसी समलम्ब औज़ारों के तीन सिरे धारदार होते हैं। इनका उपयोग तीर के अग्रभाग के रूप में होता होगा।

त्रिकोण

नवचन्द्राकार

समलम्ब औज़ार

स्रोतः ई.एच.आई.-02, खंड-1, इकाई-3

4.3.2 मध्य पाषाण युग की बस्तियाँ

अब हम भारत में मध्य पाषाण युग की महत्वपूर्ण बस्तियों के विषय में चर्चा करेंगे।

i) पचपद्र नदी घाटी और सोजत (राजस्थान) इलाके में सूक्ष्म औज़ार काफी मात्रा में मिले हैं। यहां पाई गई एक महत्वपूर्ण बस्ती तिलवारा है। तिलवारा में दो सांस्कृतिक चरण पाए गए हैं। पहला चरण मध्य पाषाण युग का प्रतिनिधित्व करता है तथा इस चरण की विशेषता सूक्ष्म औज़ारों का पाया जाना है। दूसरे चरण में चाक पर बने हुए मिट्टी के बर्तन और लोहे के टुकड़े इन सूक्ष्म औज़ारों के साथ पाए गए हैं। मध्य पाषाण युग की बड़ी बस्तियों में से एक है – बंगोर (राजस्थान) जो कोठारी नदी के किनारे स्थित है। बगोर में खुदाई की गई तो तीन सांस्कृतिक अवस्थाएं पाई गई। रेडियो कार्बन डेटिंग में अवस्था-I या संस्कृति की सबसे प्रारंभिक अवस्था का समय 5000 से 2000 बी.सी.ई. निश्चित किया गया है।

ii) गुजरात में ताप्ती, नर्मदा, माही और साबरमती नदियों के आसपास भी कई मध्य पाषाण युग की बस्तियाँ पाई गई हैं। अक्खज, बलसाना, हीरपुर और लंघनाज साबरमती नदी के पूरब में स्थित है। लंघनाज का विस्तार से अध्ययन किया गया है। लंघनाज में तीन सांस्कृतिक अवस्थाएं पाई गई हैं। अवस्था-I में सूक्ष्म औज़ार पाए गए हैं। सूक्ष्म औज़ारों में ब्लेड, त्रिकोणीय औज़ार, अर्धचन्द्रकार औज़ार, खुरचनी और तक्षणी आदि प्रमुख हैं।

iii) विन्धय और सतपुरा इलाके में मध्य पाषाण युग की अनेक बस्तियाँ पाई गई हैं। प्रयागराज जिले के प्रतापगढ़ इलाके में सराय नहर राय (उत्तर प्रदेश) का विस्तार से अध्ययन किया गया है। कैमूर पर्वत श्रृंखला में मध्य पाषाण युग की दो प्रमुख बस्तियाँ पाई गई हैं – मोरहाना पहाड़ (उतर प्रदेश) और लेखहीया (उतर प्रदेश)। भीमबेटका (मध्य प्रदेश) में अनेक सूक्ष्म औज़ार मिले हैं। भीमबेटका में पारिस्थितिकी संतुलन बसने के लिए अनुकूल था। भीमबेटका के दक्षिण में आदमगढ़ (होशंगाबाद) में मध्य पाषाण युग की एक प्रमुख बस्ती पाई गई है।

iv) कोंकण के तटीय इलाके और आन्तरिक पठार में भी मध्य पाषाण युग के औज़ार पाए गए हैं। कोंकण इलाके में कसूशोअल, जनयेरी, दभालगो और जलगढ़ जैसी कुछ प्रमुख बस्तियाँ पाई गई हैं। असिताश्म के बने दक्षिण पठार में भी अनेक मध्य पाषाण युग की बस्तियाँ पाई गई हैं। धुलिया और पूना जिले में सूक्ष्म औज़ार पाए गए हैं।

v) छोटा नागपुर पठार, उडीशा के तटीय मैदानी क्षेत्र, बंगाल डेल्टा, ब्रह्मपुत्र घाटी और शिलांग पठारी इलाके में भी सूक्ष्म औज़ार पाए गए हैं। प्राक् नवपाषाण युग के सूक्ष्म औज़ार छोटा नागपुर पठार में पाए गए हैं। मयूरभंज, कियोनझर और सुन्दरगढ़ में भी सूक्ष्म औज़ार पाए गए हैं। पश्चिम बंगाल में दामोदर नदी के किनारे बीभानपुर की भी खुदाई हुई है। यहां पर भी सूक्ष्म औज़ार पाए गए हैं। मेघालय की गारो पहाड़ियों में स्थित सेबालगिरी-2 में भी प्राक नव पाषीणयुगीन सूक्ष्म औज़ार पाए गए हैं।

vi) कृष्णा और भीमा नदी में भी अनेक सूक्ष्म औज़ार पाए गए हैं। ये सूक्ष्म औज़ार नव पाषाण संस्कृति के चरण में भी पाए गए हैं। कर्नाटक पठार के पश्चिमी किनारे पर स्थित सगंनकल में अनेक औज़ार मिले हैं जैसे कोर, नुकीले औज़ार, अर्धचन्द्राकार पतर आदि।

गोदावरी डेल्टा में भी सूक्ष्म औज़ार काफी मात्रा में पाए गए है। यहां पर पाए गए ये औज़ार नवपाषाणीय संस्कृति से संबंधित हैं। कुरनूल इलाके में भी काफी मात्रा में सूक्ष्म औज़ार पाए गए हैं। आन्ध्र प्रदेश के चित्तूर इलाके में रेणीगुंटा में सूक्ष्म औज़ार पाए गए हैं। चूंकि मध्य पाषाण युग की काल सीमा काफी लंबी थी और भारत में अनेक मध्य पाषाण युग की बस्तियाँ पाई गई हैं। अतः विभिन्न बस्तियों को कालक्रमानुसार और वहां प्राप्त भौतिक अवशेषों के आधार पर वर्गीकृत करने का प्रयास किया गया है। कालक्रम तथा सूक्ष्म औज़ारों की बहुतायत मध्य पाषाण युग के सूचक हैं। कुछ बस्तियाँ कालक्रमानुसार बाद की हैं और मध्य पाषाण संस्कृति से प्रभावित है। ये सभी बस्तियाँ मध्य पाषाणीय परम्परा की बस्तियों की श्रेणी में गिनी जाती हैं। बगोर, सराय-नहर राय और अदमगढ़ में मध्य पाषाण युग की बस्तियाँ पाई गई हैं।

4.3.3 जीवन यापन के तरीके

आरंभिक मध्यपाषाणीय बस्तियों से जानवरों जैसे भेड़, बकरी, भैंस, सूअर, कुता, हाथी, दरियाई घोड़ा, बनैले सूअर, गवल, गीदड़, भेड़िए, चीते, साम्भर, बारहसिंघे, खरगोश, काले हिरण, मृग, कछुए, साही, नेवले, छिपकली, मवेशियों आदि के अवशेष पाए गए हैं। इनमें से बहुत सी प्रजातियां मध्य पाषाण परम्परा के अंतर्गत विद्यमान रही। मध्य पाषाणीय परम्परा का प्रतिनिधित्व करने वाली बस्तियां से जंगली भेड़, जंगली बकरी, गदहा, हाथी, लोमड़ी, गवल, दरियाई घोड़ा, साम्भर, खरगोश, साही, छिपकली, चूहा, मुर्गी, कछुआ आदि नहीं पाए गए हैं। जंगली भैंसा, ऊँट, भेड़िया, गैंडा और नीलगाय मध्य पाषाणीय परम्परा के अंतर्गत पाए गए हैं। ये प्रजातियां आरंभिक मध्यपाषाणीय युग में अनुपस्थित थीं। किसी विशेष काल में पशुओं का पाया जाना और न पाया जाना वस्तुतः जलवायु और पर्यावरण संबंधी परिवर्तन पर निर्भर करता है।

मध्य पाषाण युग के दौरान लोग शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों प्रकार का भोजन खाते थे। मध्य पाषाण युग की अनेक बस्तियों जैसे लंघनाज और तीलवारा से मछली, कछुए, खरगोश, नेवले, साही, मृग, नीलगाय के अवशेष पाए गए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि भोजन के रूप में इनका उपयोग किया जाता होगा। शिकार करने और मछली मारने के अलावा मध्य पाषाण युग के लोग जंगली कन्द मूल, फल और मधु आदि का भी संग्रह करते थे और यह उनके भोजन का पूर्ण हिस्सा था। ऐसा प्रतीत होता है कि पौधों से प्राप्त भोजन शिकार से प्राप्त भोजन की अपेक्षा अधिक सुलभ था। कुछ इलाकों में घास, खाने योग्य जड़, बीज, काष्ठफल और फल काफी मात्रा में उपलब्ध थे और लोग भोजन के साधन के रूप में इनका उपयोग करते होंगे। कुछ वर्तमान शिकारी/संग्रहकर्ताओं के संदर्भ में यह तर्क दिया जाता है कि उनका मुख्य भोजन फल-फूल ही है। शिकार से प्राप्त भोजन केवल पूरक का ही काम करता है। मध्य पाषाण युग के संदर्भ में पशु मांस और पेड़-पौधों से प्राप्त भोजन के बीच तारतम्य स्थापित करना मुश्किल है क्योंकि पौधों के अवशेष जल्दी नष्ट हो जाते हैं। यह भी तर्क दिया जा सकता है कि काफी हद तक भोजन की पूर्ति शिकार के माध्यम से होती थी।

पत्थर की गुफाओं की दीवारों पर बनाए गये चित्रों और नक्काशियों से मध्य पाषाण युग के सामाजिक जीवन और आर्थिक क्रियाकलाप से संबंधित काफी जानकारी मिलती है। भीमबेटका, आदमगढ़, प्रतापगढ़, मिर्जापुर, मध्य पाषाण युग की कला और चित्रकला की दृष्टि से समृद्ध हैं। इन चित्रों से शिकार करने, भोजन जुटाने, मछली पकड़ने और अन्य मानवीय क्रियाकलापों की भी झलक मिलती है। भीमबेटका में भी काफी चित्र बने मिले हैं। इनमें बहुत से जानवरों जैसे जंगली सूअर, भैंसे, बन्दर और नीलगाय के चित्र बने मिले हैं। इन चित्रों और नक्काशियों से यौन संबंधों, बच्चों के जन्म, बच्चे के पालन पोषण और शव दफन से संबंधित अनुष्ठानों की भी झलक मिलती हैं।

मध्यपाषाणीय चित्रकला, भीमबेटका। श्रेयः डॉ. अभिषेक आनन्द।

इन सब बातों से यह संकेत मिलता है कि मध्य पाषाण युग में पुरापाषाण युग की अपेक्षा सामाजिक संगठन अधिक सुदृढ़ हो गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि मध्य पाषाण युग के लोगों का धार्मिक विश्वास पारिस्थितिकी और भौतिक परिस्थितियों से प्रभावित था।

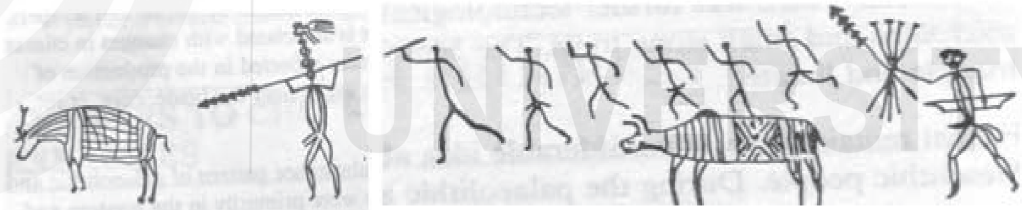

मध्यपाषाणीय चित्रकलाएँ, भीमबेटका। स्रोतः ई.एच.आई.-02, खंड-1, इकाई-3।

बोध प्रश्न 2

1) मध्य पाषाण युग के औज़ार हैं:

   क) हाथ की कुल्हाड़ी और चीरने के औज़ार

   ख) चीरने के औज़ार और काटने के औज़ार

   ग) ब्लेड, कोर, नुकीले औज़ार और नवचन्द्राकार औज़ार

   घ) काटने के औज़ार और परत।

2) निम्नलिखित स्थानों में मध्य पाषाण युग की बस्तियाँ पाई गई हैं :

   क) कोठारी नदी

THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ख) ताप्ती नदी

ग) गोदावरी डेल्टा

घ) कोठारी नदी, ताप्ती नदी और गोदावरी डेल्टा।

3) निम्नलिखित कथनों में से सबसे सही कथन कौन सा हैः

क) मध्य पाषाण युग के लोगों का जीवन यापन जानवरों के शिकार पर निर्भर था।

ख) उनका जीवन जंगली कंदमूल फल के संग्रह पर निर्भर था।

ग) वे जानवरों का शिकार करते थे और जंगली फलों का संग्रह करते थे।

घ) उनका जीवन अधिशेष खाद्य उत्पादन पर निर्भर था।

4) मध्य पाषाण युग के औज़ारों और चित्रकला के आधार पर मध्य पाषाण युग के जीवन-यापन ढांचे और सामाजिक संगठनों पर प्रकाश डालें।

....

....

....

....

4.4 संस्कृति का नवपाषाण चरण

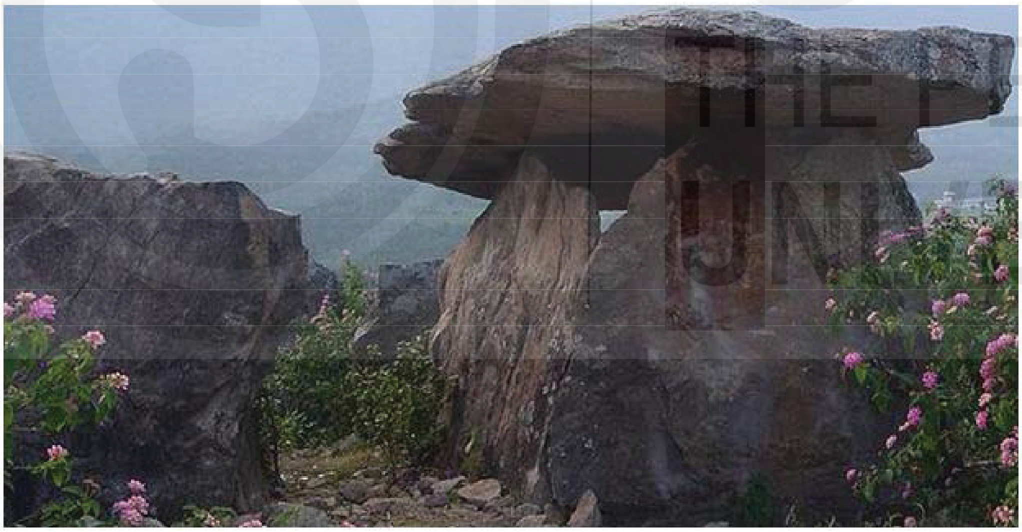

केरल के मरयूर में नवपाषाण लोगों द्वारा बनाया गया एक डोलमेन। श्रेयः सनन्दकरूनाकरन। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स (https://en.wikipedia.org/wiki/File:MarayoorDolmen.JPG)।

पिछले खंड में आपने पढ़ा है कि सामान्यतः मानव समुदाय अपने अस्तित्व में सबसे अधिक लम्बे समय तक शिकारी/संग्राहक के रूप में जीवित रहे। उनके अस्तित्व का यह चरण उनके पत्थर के औज़ारों से प्रकट होता है जिन्हें पुरातत्वविदों ने निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया हैः

i) पूर्व पाषाण और

ii) मध्य पाषाण

इनके औज़ारों द्वारा जिन पशुओं का शिकार किया गया है उनके अवशेषों के आधार पर भी उनका वर्गीकरण किया गया है। मानव समुदायों ने संस्कृति के एक नए चरण में उस समय प्रवेश किया जब जीवित रहने के लिए उन्होंने प्रकृति के साधनों पर पूरी तरह से निर्भर रहने की बजाए जौ, गेहूं और चावल जैसे अनाज उगाकर अपने भोजन का स्वयं उत्पादन करना शुरू किया और दूध तथा मांस की पूर्ति के लिए और विभिन्न प्रयोजनों के वास्ते उनके श्रम का उपयोग करने के लिए कुछ विशेष प्रकार के पशुओं को पालना शुरू किया। मानव संस्कृति के इस चरण की शुरुआत नए प्रकार के पत्थर के औज़ारों से पता चलती है जो औज़ार नवपाषाण औज़ार अथवा नव पाषाण युग के औज़ार कहलाते हैं। नवपाषाण औज़ार और इस चरण से संबंधित विभिन्न पहलू, जब यह औज़ार बनाए गए थे। संस्कृति के उस चरण के विभिन्न तत्व हैं जिनमें यह नवपाषाण समुदाय रहे थे। इस खंड में नील घाटी और पश्चिम एशिया में नवपाषाण संस्कृति के प्रसार तथा इसकी विशेषताओं पर भारतीय उपमहाद्वीप में नवपाषाण चरण के अध्ययन की पृष्ठभूमि के रूप में संक्षेप में विचार किया गया है।

वनस्पति कृषिकरण और पशुओं को पालना संस्कृति के नवपाषाण चरण का एक मुख्य विशिष्ट लक्षण माना गया है। नियोलिथिक (नवपाषाण) शब्द का प्रयोग सबसे पहले सर जॉन लुबॉक ने अपनी पुस्तक *''प्रिहिस्टोरिक टाइम्स''* (सर्वप्रथम 1865 में प्रकाशित) में किया था। उसने इस शब्द का प्रयोग उस युग को बताने के लिए किया था जिस युग में पत्थर के उपकरण अधिक कुशलता से और अधिक रूपों में बनाए गए और उन पर पालिश भी की गई। बाद में वी. गार्डन चाइल्ड ने नवपाषाण-ताम्रपाषाण संस्कृति को अपने आप में पर्याप्त अन्न उत्पादक अर्थव्यवस्था बताया और माइल्स बरकिट ने इस बात पर ज़ोर दिया कि निम्नलिखित विशिष्ट विशेषकों को नवपाषाण संस्कृति का माना जाना चाहिएः

- कृषि कार्य
- पशुओं को पालना
- पत्थर के औज़ारों का घर्षण और उन पर पालिश करना,
- मृदभांड बनाना।

नवपाषाण की संकल्पना में इधर कुछ वर्षों में परिवर्तन हुआ है। एक आधुनिक अध्ययन में उल्लेख किया गया है कि नवपाषाण शब्द उस पूर्व-धातु चरण संस्कृति का सूचक होना चाहिए। जब यहां रहने वालों ने अनाज उगाकर और पशुओं को पालतू बनाकर भोजन की विश्वस्त पूर्ति की व्यवस्था कर ली थी और एक स्थान पर टिक कर जीवन बिताना आरम्भ कर दिया था। फिर भी, घर्षित पत्थर के औज़ार नवपाषाण संस्कृति की सर्वाधिक अनिवार्य विशेषता है। वनस्पति कृषिकरण और पशुओं को पालने सेः

- एक स्थान पर टिककर जीवन बिताने के आधार पर ग्राम समुदायों की शुरुआत हुई,
- कृषि तकनीकी की शुरुआत हुई,
- प्रकृति पर और अधिक नियंत्रण अथवा प्राकृतिक साधनों का दोहन हुआ।

तथापि अपने स्वयं के उपमहाद्वीप में संस्कृति के नवपाषाण चरण के साक्ष्यों और विनिर्दिष्टताओं पर विचार करने से पहले हम मनुष्यों द्वारा भारत से बाहर के क्षेत्रों में तथा भारतीय उपमहाद्वीप में पशुओं को पालने और वनस्पति कृषीकरण की प्रक्रिया के शुरुआत पर संक्षेप में विचार करेंगे।

तालिका-1

क्षेत्र	युग	खेती
नील घाटी	लगभग 12,500 बी.सी.ई.	गेहूं और जौ
पश्चिम एशिया	लगभग 8500 बी.सी.ई.से आगे	- वही -
बलूचिस्तान	लगभग 6000 बी.सी.ई.से आगे	- वही -
उत्तर प्रदेश में बेलान घाटी	लगभग 5440-4530 बी.सी.ई.	चावल
दक्षिण भारत	लगभग 2500-1500 बी.सी.ई.	रागी

4.5 सबसे प्राचीन किसान

अभी हाल तक ऐसा समझा जाता था कि वनस्पति कृषीकरण और पशुओं को पालने के कार्य की शुरुआत पश्चिम एशिया में हुई और वहां से यह विसरण के द्वारा संसार के विभिन्न अन्य क्षेत्रों में फैला। लेकिन अब मिस्र में नील घाटी तथा अन्य क्षेत्रों के हाल ही में प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर, इन दृष्टिकोणों में संशोधन करना आवश्यक है।

4.5.1 नील घाटी

गेहूं और जौ की सबसे पहली खेती के बारे में जो नया साक्ष्य प्रकाश में आया है वह निम्नलिखित स्थानों पर उत्खननों से प्राप्त हुआ हैः

- वाडी कुब्बानिया (दक्षिण मिस्र में आसवान के उत्तर में थोड़ी दूरी पर स्थित),
- बाडी टस्का (आबू सिम्बेल के पास जो अब जलमग्न है),
- कोम अम्बो (आसवान के उत्तर से कुब्बानिया स्थलों से लगभग 60 किलोमीटर दूर), और
- एसना के पास का स्थल-समूह।

इस साक्ष्य के विषय में बात यह है कि ये सभी नील घाटी में स्थित उत्तर पुरापाषाण स्थल हैं, न कि नवपाषाण स्थल।

पुरातत्वविदों ने इन स्थलों का काल-निर्धारण आज से 14500-13000 वर्षों के बीच किया है।

नील घाटी से प्राप्त साक्ष्यों से कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठते हैंः

- चूंकि मिस्र के स्थलों में पशुओं को पालतू बनाए जाने के कोई प्रमाण नहीं मिलते अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इस क्षेत्र में अनाजों की खेती पशुओं को पालने से पहले आरम्भ हुई। इस प्रकार वनस्पति कृषिकरण और पशुओं के पालने के कार्य आवश्यक रूप से अन्त सम्बद्ध नहीं हैं।
- चूंकि अनाजों की खेती परवर्ती पुरापाषाण औज़ार से सम्बद्ध हैः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कुछ मामलों में अनाज उत्पादन उस नवपाषाण संस्कृति से पहले हुआ जिससे घर्षित पत्थर के औज़ार सम्बद्ध हैं।
- अनाजों की खेती से नवपाषाण क्रान्ति को बल मिला और यह खेती इस क्रान्ति से पहले हुई।

- चूंकि कुब्बनिया स्थल जंगली गेहूं और जंगली जौ, दोनों के विदित क्षेत्र से बाहर स्थित हैं, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह आवश्यक नहीं है कि अन्न उत्पादन उन्हीं क्षेत्रों से शुरू हुआ जहां पेड़-पौधे अपने जंगली रूप में विद्यमान थे।
- जैसा पहले विश्वास किया जाता था कृषिकरण पश्चिम एशिया से शुरू नहीं हुआ।

4.5.2 पश्चिम एशिया के प्रारम्भिक किसान

आइए, पश्चिम एशिया में विकास की प्रक्रिया पर विचार करें। इस क्षेत्र में फिलीस्तीन, सीरिया, तुर्की, इराक, कैस्पियन द्रोणी और ईरान के आसपास के क्षेत्र आते हैं। ये वे आधुनिक नगर हैं जहां पुरातत्वविदों ने सबसे प्रारंभिक खेती करने वाली ग्राम बस्तियों को पता लगाया है। अब यह भली-भांति विदित है कि फिलीस्तीन, सीरिया और तुर्की में खेती नवीं-आठवीं सहस्राब्दि बी.सी.ई. में शुरू हुई थी। यह महत्वपूर्ण है कि इस क्षेत्र के शिकारियों-संग्राहकों ने एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकना छोड़ दिया और एक स्थान पर टिककर जीवन बिताना आरम्भ किया। पहले उन्होंने यह काम वन्य साधनों के दोहन पर आश्रित रहते हुए कुछ स्थानों पर किया। मुरेबात, उत्तर सीरिया में यूफरेट्स पर आबू हरेयरा का उत्तर और उसी नदी पर दक्षिण तुर्की में सुबेरदे जैसे स्थलों में स्थायी बस्तियाँ शिकार करने और बटोरने पर ही पूरी तरह से फलफूल सकती थीं। खेती में संक्रमण एक धीमी प्रक्रिया थी परन्तु लगभग नवें सहस्राब्दि बी.सी.ई. से ऐसा साक्ष्य मिला है कि स्थायी समुदायों का खेती को अपने स्थायी जीवन के स्वरूप का अनिवार्य आधार बनाकर आविर्भाव हो रहा था। ऐसे अनेक स्थल हैं, जहां पश्चिम एशिया में किसानों के स्थायी समुदायों का पता चलता हैः

i) लगभग 8500-7500 बी.सी.ई.के बीच फिलीस्तीन में जरीको एक बड़ा गांव बन गया था जहां कृषि के साक्ष्य तो मिले हैं परन्तु पशुओं को पालने के कोई साक्ष्य नहीं मिले हैं (यह कार्य बाद में हुआ)। उत्खनन के दौरान उत्तर स्तरों में यह पाया गया कि ज़ेरीको के चारो ओर दो मीटर चौड़ी पत्थर की दीवार थी और गोल मीनारें थीं। संसार में किलेबंदी का यह एक सबसे प्रारंभिक उदाहरण है।

ii) दक्षिण तुर्की में हुयुक एक बड़ा गांव था। यहां गेहूं, जौ और मटर की खेती होती थी। मवेशी, भेड़, बकरी जैसे जानवरों को घर में पाला जाता था। कच्चे मकान जिनमें छत से होकर प्रवेश करना होता था दो कमरों के होते थे और मकानों की दीवार मिली होती थीं। घरों की दीवारों पर तेंदुआ, फूटते हुए ज्वालामुखी और बिना सिर के मानव शवों को निगलते हुए गिद्धों के चित्र बने हुए मिले हैं। इस स्थान पर भौतिक संस्कृति के साक्ष्य मृदभांडों, पत्थर की कुल्हाड़ियों, पत्थर के आभूषणों, हड्डियों के औज़ारों, लकड़ी के कटोरों और करंडशिल्प के रूप में मिले हैं।

iii) इराक में जारमों में स्थायी रूप से बसे कृषि गांवो (लगभग 6500-5800 बी.सी.ई.) के भी साक्ष्य मिले हैं। इनमें लगभग 20 से 30 तक कच्चे मकान होते थे। प्रत्येक में एक आंगन और कई कमरे होते थे और वहां घर्षित पत्थर की कुल्हाड़ियां, चक्कियां, मृदभांड आदि भी होते थे। लोग गेहूं और जौ उगाते थे तथा भेड़-बकरी पालते थे।

iv) ईरान में खेती खजिस्तान के क्षेत्र में आठवें सहस्राब्दि बी.सी.ई. के दौरान शुरू हुई। लगभग उसी समय जब फिलीस्तीन और अनातोलिया में शुरू हुई। दक्षिण ईरान में (लगभग 7,500 बी.सी.ई. से) अली कोश में हमें ऐसे लोगों के एक जाड़े के मौसम के शिविर के साक्ष्य मिले हैं/जो लोग गेहूं और जौ की खेती करते थे और जो भेड़ भी पालते थे। ऐसा लगता है कि इस क्षेत्र में पशु-पालन और खेती अंर्तसंबंधित थे।

पश्चिम एशिया में फसल उगाना और पशुओं को पालना का कुछ स्थलों पर अंर्तसंबंधित है जबकि कुछ क्षेत्रों में कृषि कार्य पशुओं को पालने के कार्य से पहले शुरू हुआ।

बोध प्रश्न 3

1) संस्कृति के नवपाषाण चरण की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

....

....

....

....

2) नील घाटी में उत्खननों से प्रारम्भिक कृषि के सम्बन्ध में जो मुख्य प्रश्न उठे हैं उन पर प्रकाश डालिए।

....

....

....

....

3) रिक्त स्थानों को भरिए:

i) गार्डन चाइल्ड के अनुसार नवपाषाण संस्कृति एक .... (आश्रित/आत्मनिर्भर) अन्न उत्पादक अर्थव्यवस्था थी।

ii) .... (घर्षित पत्थर/तांबे) के औज़ार नवपाषाण संस्कृति के अनिवार्य लक्षण रहे हैं।

iii) ज़ेरीको ऐसा सबसे प्राचीन ज्ञात गांव है जिसमें .... (पानी का तालाब/मिट्टी की किलेबंदी) थी।

iv) कताल हुयुक .... (तुर्की/ईरान) में एक .... (बड़ा/छोटा) गांव था।

4.6 भारतीय उपमहाद्वीप के प्राचीन किसान

इस महाद्वीप में कृषिकरण और पशुओं को पालने का इतिहास वस्तुतः नवपाषाण संस्कृतियों के उदय से प्रारम्भ होता है। घर्षित पत्थर की कुल्हाड़ियों को छोड़कर इस उपमहाद्वीप की नवपाषाण संस्कृतियां तालिका-2 में उल्लिखित भौगोलिक क्षेत्रों में वर्गीकृत की जा सकती हैं।

तालिका-2 भारतीय उपमहाद्वीप के क्षेत्र

उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र – (अफ़ग़ानिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान, विशेष तौर पर बलूचिस्तान में कच्ची मैदान मिलाकर)

उत्तर क्षेत्र – (इसमें कश्मीर घाटी आती है)

दक्षिण-पूर्वी उत्तर प्रदेश – (इसमें इलाहाबाद, मिर्जापुर, रीवा और सिंघी जिलों में विंध्य दृश्यांश – खास तौर पर बेलान घाटी आती है)

मध्य पूर्वी क्षेत्र – (उत्तरी बिहार)

पूर्वोत्तर क्षेत्र – (इसमें असम और निकटवर्ती उप-हिमालय क्षेत्र आते हैं)

मध्य पूर्वी क्षेत्र – (इसमें छोटा नागपुर का पठार, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में विस्तार सहित आते हैं)

दक्षिणी क्षेत्र – (इसमें प्रायद्वीपीय भारत आता है)

इन क्षेत्रों में नवपाषाण कालीन संस्कृतियों की विशेषताओं पर हम अलग-अलग विचार करेंगे।

4.6.1 उत्तर पश्चिमी क्षेत्र

इसी क्षेत्र (आज का अफगानिस्तान और पाकिस्तान) में हमें गेहूं और जौ की खेती की शुरुआत के सबसे पहले साक्ष्य मिले हैं। उत्त्तरी अफगानिस्तान में पुरावत्वविदों ने ऐसी गुफाएं खोजी हैं जहां शिकारी और संग्रहकर्ता रहते थे। इन गुफाओं में जंगली भेड़ों, मवेशियों और बकरियों की हड्डियों के अवशेष मिले हैं। 7000 बी.सी.ई. के आसपास अफ़गानिस्तान में भेड़ और बकरियां पाली जाती थीं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि मध्य एशियाई क्षेत्र और इसकी परिधियां – जिसमें आज का पंजाब, कश्मीर, पश्चिमी पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान और तजाकिस्तान और उज़्बेकिस्तान और पश्चिमी त्यान शान शामिल हैं – ब्रेड गेहूं और स्पेल्ट गेहूं की खेती के मूल स्थान थे।

पाकिस्तान और बलूचिस्तान में कृषि और पशुओं को पालने की शुरुआत के सम्बन्ध में पुरातात्विक उत्खननों में साक्ष्य मिले हैं। बलूचिस्तान में कच्ची के मैदानों को ऐसे अनेक लाभ प्राप्त थे और ऐसी अनेक सुविधाएं प्राप्त थीं जिससे उस क्षेत्र में प्रारंभिक कृषि अर्थव्यवस्था का उदय हुआ। भीतरी बलूचिस्तान की बंजर श्रेणियों के मध्य छोटी घाटियों में पहाड़ियों से आती नदियों द्वारा तथा बारहमासी नदी व्यवस्थाओं द्वारा लाई गई उपजाऊ जलोड़क से उन भूमि खंडों पर सिंचाई करना आसान हो गया था जहां उस समय वनस्पति उगती थी।

मेहरगढ़ का स्थल इसी पारिस्थितिक परिवेश में है। यह क्वेटा से लगभग 150 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस स्थल पर उत्खननों से पता चलता है कि इस क्षेत्र का पूर्व मृदभांड उत्तर नवपाषाणकाल से समुद्र हड़प्पा-काल तक एक लम्बा सांस्कृतिक इतिहास रहा है। मेहरगढ़ में नवपाषाण स्तर दो चरणों में वर्गीकरण किए गए हैं – i) प्रारंभिक अमृदभांड (मृदभांड रहित) और ii) उत्तरवर्ती चरण। जिन अनाजों की यहां खेती की जाती थी उनमें जौ की दो किस्में और गेहूं की तीन किस्म शामिल थीं। अलूचा और खजूर के जले हुए बीज भी इन बस्तियों से ही प्राप्त हुये थे।

उत्खननों के दौरान नवपाषाण-काल (काल-1) के प्रारंभिक स्तरों में चिकारा, अनूप मृग, कुरंग जैसे जंगली जानवरों और भेड़-बकरी और मवेशियों की हड्डियों मिली हैं। लेकिन शीर्ष स्तर में (नवपाषाण निक्षेपों का उत्तरवर्ती चरण) में पालतू मवेशियों भेड़, बकरियों की हड्डियों मिली हैं। साथ ही जंगली चिकारा, सूअर और गोरखर की हड्डियां भी मिली हैं। अतः इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि भेड़-बकरियां स्थानीय रूप से पाली जाती थीं। यहां पूर्व मृदभांड बस्ती की शुरुआत लगभग 6000 बी.सी.ई. निर्धारित की गई है।

नवपाषाणकाल में जीविका के स्वरूप की विशेषता है प्रारंभिक कृषि और पशुओं के पालने तथा साथ ही शिकार पर आधारित मिश्रित अर्थव्यवस्था। यहां के निवासी कच्ची ईंटों के आयताकार मकानों में रहते थे। कुछ संरचनाओं को छोटे वर्गाकार भागों में विभक्त कर दिया गया था। और उन्हें भंडारण के लिए उपयोग में लाया जाता था। औज़ारों की किट में एक पत्थर की कुल्हाड़ी, पांच पत्थर के बसूले, पच्चीस घर्षण पत्थर और सोलह लोढ़ शामिल होते थे। इनमें विशिष्ट फलक उद्योग के सूक्ष्म पाषाण औज़ार भी प्रचुर मात्रा में होते थे। कुछ फलकों पर चमक भी है जो कण काटने के लिए उपयोग में चकमक की विशेषता है।

मेहरगढ़ से प्राप्त साक्ष्य के आधार पर लगता है कि शायद कच्ची के मैदान मवेशी और भेड़ पालने के तथा गेहूं और जौ खेती के स्वतंत्र अधिकेन्द्र (मूल केन्द्र) थे। मेहरगढ़ में काल-II ताम्रपाषाण चरण (लगभग 5000 बी.सी.ई.) का सूचक है जिसमें गेहूं और जौ की खेती के साथ-साथ कपास और अंगूर की खेती के भी साक्ष्य मिले हैं। सम्भवतः हड़प्पा निवासियों ने

गेहूं, जौ और कपास की खेती का ज्ञान मेहरगढ़ के प्रारंभिक पूर्वजों से प्राप्त किया होगा। (हड़प्पा निवासियों के लिए अगली इकाई देखें)। अतः मेहरगढ़ से प्राप्त इस साक्ष्य के कारण इस सिद्धान्त को संशोधित करना पड़ेगा कि कृषि और पशुओं को पालने का कार्य भारतीय उपमहाद्वीप की ओर पश्चिम एशिया से फैला।

नवपाषाण काल के घर (मेहरगढ़)। स्रोतः- ई.एच.आई.-02, खंड-1, इकाई-4।

4.6.2 कश्मीर घाटी की नवपाषाण संस्कृति

कश्मीर घाटी में ग्राम बस्तियों का लगभग 2500 बी.सी.ई. में आविर्भाव हुआ। बुर्जहोम और गुफ़कराल में हुए उत्खननों से इस क्षेत्र में नवपाषाण संस्कृति पर पर्याप्त प्रकाश पड़ा है। इस क्षेत्र के नवपाषाण चरण को बुर्ज़होम में दो चरणों में और गुफ़कराल में तीन चरणों में वर्गीकृत किया गया है। उत्तरवर्ती स्थल पर सबसे प्रारंभिक अमृदभांड (पुरा मृद्भांड यानि सबसे पुराने मिट्टी के बर्तन) चरण है जो भारत में पहली बार खोजा गया है। कश्मीर घाटी की नवपाषाण संस्कृति की विशेषता है। गर्त आवास, अच्छी तरह बनाए गए और गेरू से रंगे फर्श और साथ ही खुले में भी आवास और बड़ी मात्रा में प्राप्त हड्डी के अद्वितीय औज़ारों से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह अर्थव्यवस्था प्रधानतः आखेट अर्थव्यवस्था थी।

गुफ़कराल में चरण-I में फलियों मसूर, अरहर, गेहूं और जौं के जले हुए अन्न कण प्राप्त हुए हैं और साथ ही मवेशियों, भेड़-बकरियों, साकिन, लाल मृग और भेड़िया जैसे पशुओं की हड्डियां भी मिली हैं। चरण-II और चरण-III की विशेषता है कि उनमें वनस्पति कृषीकरण और पाले गए जानवरों के साक्ष्य मिले हैं। उत्तरवर्ती चरणों से जो अन्य उल्लेखनीय वस्तुएं प्राप्त हुई हैं उनमें लम्बी आदिम कुल्हाड़ियां, प्रस्तर नोकें, परिष्कृत हड्डी के औज़ार (मत्स्य भाले, वाणाग्र आदि) और छिद्रित हार्वेस्टर शामिल हैं। मानव शवाधानों के बीच कुत्तों के शवाधान भी मिले हैं। इनसे पता चलता है कि चरण- I की अनिवार्य आखेट-संग्राहक अर्थव्यवस्था का किस प्रकार धीरे-धीरे चरण – II में सुस्थापित कृषि अर्थव्यवस्था में विकास हो गया।

यहां यह उल्लेखनीय है कि बुर्जहोम की नवपाषाण संस्कृति का मृदभांड, हड्डी और पत्थर की वस्तुओं में स्वात घाटी के सराय खोला और घाली गई के साथ सादृश्य प्रकट होता है। गर्त आवास, हार्वेस्टर और कुत्तों के शवाधान उत्तर चीनी नवपाषाण संस्कृति की विशेषताएं हैं। बुर्जहोम में प्राप्त मृदभांडों से संकेत मिलता है कि इनका पूर्व हड़प्पा निवासियों से भी सम्पर्क था।

दो स्थलों से उपलब्ध सी-14 तिथि-निर्धारणों से संकेत मिलता है कि कश्मीर घाटी में नवपाषाण संस्कृति की समय अवधि लगभग 2500-1500 बी.सी.ई. थी।

4.6.3 बेलान घाटी के प्राचीन किसान

बेलान नदी पूर्व से पश्चिम की ओर विंध्य पठार दृश्यांश के किनारे के साथ-साथ बहती है। यह टोस नदी की उप-नदी है जो प्रयागराज के पास गंगा में मिलती है। यह क्षेत्र मानसून मेलखा का एक भाग है। सारे क्षेत्र में सागौन (टीक), बांस और ढाक के घने जंगल हैं। ये जंगल, बाघ, नीलगाय, चीतल आदि जैसे वन्य पशुओं के प्राकृतिक आवास हैं तथा यहां घनी घास, जंगली चावल सहित उगी हुई है। अनुपुरापाषाण-काल तक से यह स्थान प्रारंभिक पाषाण युग के लोगों का प्रिय आखेट स्थल रहा है। बेलान घाटी के सम्बद्ध उत्खनन स्थल, जिनसे अन्न संग्रह चरण से अन्न उत्पादन चरण में संक्रमण के संकेत मिलते हैं वो चौपानी-मांडो, कोल्डीरोवा और महागरा है।

पुरातत्वविदों ने चौपानी-मांडों में अनुपुरापाषाण काल से उत्तरवर्ती मध्य पाषाण युग अथवा खाद्य नवपाषाण युग तक का तीन चरणों का अनुक्रम सिद्ध किया है। चरण-I (उन्नत मध्यपाषाण युग) की विशेषताएँ हैं कि अर्द्ध स्थानबद्ध सामुदायिक जीवन तथा विशिष्ट आखेट-संग्रह अर्थव्यवस्था। यहां मधुमक्खी के छत्ते जैसे झोपड़ियां, साझा चूल्हे, असुबाहय निहाई, ज्यामितीय आकार के सूक्ष्म पाषाण, बड़ी संख्या में वलय-पत्थर और हाथ से बने सुन्दर मिट्टी के बर्तन मिले थे। आकार और प्रकार में अनेक तरह की चक्कियां और लोढ़े इस बात के परिचायक हैं कि उस समय अधिक ज़ोर अन्न संग्रह पर दिया जाता था। इस चरण में जंगली चावल और जंगली मवेशियों, भेड़ और बकरियों की हड्डियों के महत्वपूर्ण प्रमाण भी मिले हैं।

> एकल संस्कृति स्थल ऐसा पुरातात्विक स्थल है जहां नवपाषाण या ताम्रपाषाण जैसे संस्कृति के एकल चरण में ही बस्ती थी। यदि एक स्थल से उत्खनन के बाद पता चलता है कि इसमें नवपाषाण, ताम्रपाषाण अथवा लोहे के प्रयोग के चरणों में बस्ती थी तो इसे बहु-संस्कृति स्थल कहा जाएगा और नवपाषाण चरण को प्रथम काल, ताम्रपाषाण चरण को द्वितीय काल तथा लोहे के प्रयोग के चरण को तृतीय काल कहा जाएगा। इन कालों से उस स्थल की संस्कृतियों का काल अनुक्रम प्रदर्शित होगा।

कोल्डीहवा में उत्खननों से त्रिविधि सांस्कृतिक अनुक्रम (नवपाषाण, ताम्रपाषाण और लौह युग) का पता चलता है। महागरा एकल संस्कृति (नवपाषाण) स्थल है। इन दोनों स्थलों से प्राप्त संयुक्त साक्ष्य से स्थानबद्ध जीवन, चावल (**ऑरीज़ा सेटीवा**) उगाने और मवेशी तथा भेड़-बकरी पालने के संकेत मिले हैं। इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों के जीवन पर प्रकाश डालने वाली अन्य वस्तुएं हैं :

- रज्जु-चिन्हित मृदभांड,
- गोल आदिम कुल्हाड़ियां और बसूले, आयताकार अथवा अंडाकार अनुप्रस्थ काट तथा केल्सेडोनी फलकों सहित,
- वृत्ताकार/अंडाकार फर्श- हस्तकृतियों सहित,
- बड़ा मवेशी बाड़ा – मवेशियों के खुरों के निशान सहित भी महागरा स्थलों से मिले हैं।

बेलान घाटी की नवपाषाण संस्कृति से विकसित और उन्नत स्थानबद्ध जीवन का निम्नलिखित के साथ पता चलता है:

- निश्चित परिवार इकाइयाँ,
- मृद्भांड के रूपों का मानकीकरण,
- चक्कियों और लोढ़ों जैसी खाद्य संसाधन इकाइयों का सुबाहय आकार,
- छैनी, कुल्हाड़ियों और बसूलों जैसे विशिष्ट औज़ार,
- कृषीकृत चावल की खेती,
- मवेशी, भेड़/बकरी और घोड़े पालना।

यह सुझाया गया है कि बेलान घाटी के नवपाषाण कालीन किसानों का भारत (लगभग छठी सह्नसाब्दि बी.सी.ई.) में सबसे प्रारंभिक चावल उगाने वाले समुदाय के रूप में उदय हुआ, यद्यपि यह सुझाव सभी मान्य नहीं है। संग्रहण अर्थव्यवस्था से कृषि अर्थव्यवस्था में संक्रमण के भी इस क्षेत्र में स्पष्ट साक्ष्य मिलते हैं। फिर भी, मृद्भांड चोपानी-मांडो में (लगभग नवीं-आठवीं सहस्राब्दि बी.सी.ई.) उत्तरवर्ती मध्य पाषाण/आद्य नवपाण चरण में दिखाई दिए हैं। यह इस बात का सूचक है कि मृदभांड बनाने का काम कृषिकरण (चावल) और पशु (मवेशी, भेड़/बकरी और घोड़े) पालने के कार्य से पहले शुरू हो गया था।

चोपानी मांडो में संसार में मृद्भांड के इस्तेमाल के सबसे प्राचीन साक्ष्य मिले हैं।

4.6.4 बिहार/मध्य गंगा घाटी की नवपाषाण संस्कृति

सभी वनस्पति तथा जीव-जन्तु साधनों से सम्पन्न निचली मध्य गंगा घाटी में बहुत बाद में (लगभग 2000-1600 बी.सी.ई.) ग्रामीण बस्तियां बसीं। चिरांद, चेचर, सेनुआर और तारादिब आदि में हुए उत्खननों से इस क्षेत्र के नवपाषाण कालीन लोगों के जीवन स्वरूप पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। सेनुआर (जिला रोहताश) में नवपाषाण कालीन किसान चावल, जौ, मटर, मसूर और कुछ मोटे अनाजों की खेती करते थे। इस स्थल से गेहूं और घास मटर की अनेक किस्में बस्ती के उच्च स्तरों से प्राप्त हुई हैं। चिरांद (ज़िला सारन), जो गंगा के उत्तरी तट पर स्थित है, में कच्चे फर्शों, मृद्भांडों, सूक्ष्म पाषाणों, घर्षित कुल्हाड़ियों, हड्डी के औज़ारों, उपरत्नों के मनकों और पकी मिट्टी (टेराकोटा) की मानव मूर्तियों के संरचनात्मक अवशेष मिले हैं। चिरांद और सेनुआर दोनों अपने उल्लेखनीय हड्डी के औज़ारों के लिए प्रसिद्ध हैं। चिरांद में जो अनाज उगाए जाते थे वे थे गेहूं, जौ, चावल और मसूर।

सेनुआर में उत्तरवर्ती नवपाषाण-ताम्रपाषाण कालीन लोगों के अपने से पहले के लोगों द्वारा उगाई जाने वाली फसलों के अलावा चने और मूंग की खेती भी शुरू कर दी थी।

4.6.5 पूर्वी भारत के प्रारम्भिक किसान

इस क्षेत्र में उत्तरी कछार को मिलाकर असम की पहाड़ियां और गारो तथा नागा पहाड़ियां आती हैं। पारिस्थितिक दृष्टि से यह क्षेत्र बहुत वर्षा वाले मानसून क्षेत्र में आता है।

इस क्षेत्र की नवपाषाण संस्कृति की विशेषता है स्कंधयुक्त कुल्हाड़ियां, गोलाकार छोटे घर्षित कुल्हाड़े, रज्जु चिन्हित मृद्भांड जिनपर बहुत अधिक स्फटिक कण चिपकाए गए होते थे। उत्तरी कछार पहाड़ियों में देवजाली हाडिंग में किए गए उत्खननों से ऊपर बताई गई सभी वस्तुएं प्राप्त हुई हैं। ये वस्तुएं इन प्रकारों की हैं जो चीन और दक्षिण पूर्व एशिया में व्यापक रूप से पाए जाते हैं। फिर भी, असम के नवपाषाण विशेषकों का चीन अथवा दक्षिण पूर्व एशिया से सादृश्य अन्तिम रूप से निश्चित नहीं हो सका है क्योंकि इनमें बहुत अधिक कालनुक्रमिक अंतर है। असम के नवपाषाण संस्कृति चरण का तिथि निर्धारण अस्थायी रूप से 2000 बी.सी.ई. के आसपास किया गया है।

आसाम की गारो पहाड़ियों से प्राप्त पत्थर की कुल्हाड़ियाँ। स्रोत : ई.एच.आई.-02, खंड-1, इकाई-4।

4.6.6 दक्षिण भारत के प्रारम्भिक किसान

दक्षिण भारत में उन्नत आखेट अर्थव्यवस्था चरण से खाद्य उत्पादक अर्थव्यवस्था चरण में संक्रमण की समस्या अभी तक स्पष्ट रूप से सिद्ध नहीं की जा सकी है। नवपाषाण कालीन बस्तियां पहाड़ी और शुष्क दक्खन पठार पर पाई गई है जहां से भीमा, कृष्णा, तुंगभद्रा और कावेरी नदियों को जल प्राप्त होता है। यह बस्तियां खास तौर पर उन क्षेत्रों में फली-फूलीं जहां सामान्य वर्षा प्रति वर्ष 25 सेंटीमीटर से कम होती है। दक्षिण भारत की नवपाषाण संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने वाले उत्खनित स्थल हैंः सनगनकल्लू, नागार्जुन कोंडा, मस्की, बुधगिरि, टेक्कालकोटा, पिकलीहाल, कुपगल, हल्लूर, पलवाय, हेमीजे और टी. नरसीपुर।

पुरातत्वविदों ने दक्षिण भारतीय नवपाषाण संस्कृति को तीन चरणों में वर्गीकृत किया है। सबसे प्रारंभिक चरण के साक्ष्य सनगनकल्लू और नागार्जुन कोंडा में मिलते हैं। नागार्जुन कोंडा में प्राप्त आवासों के धुंधले चिन्ह, लेपित बाहरी सतहों वाले अपरिष्कृत हस्त-निर्मित पीले रक्ताभ भूरे मृद्भांड, चकमक के फलक औज़ार और घर्षित पत्थर के औज़ारों से प्रदर्शित होता है कि लोगों को खेती का केवल अल्प-विकसित ज्ञान था। संभवतः वे जानवर नहीं पालते थे। इस चरण का तिथि निर्धारण लगभग 2500 बी.सी.ई. अथवा इससे पहले किया जा सकता है।

चरण- II में चरण-I के लक्षण तो जारी रहे ही, मृद्भांड मुख्यतः लाल भांड बनावट के थे। तथापि, मणिकारी कला और पशु पालना नए लक्षण हैं। अब सूक्ष्म पत्थर स्फटिक क्रिस्टलों के बनने लगे थे।

चरण- III में (तिथि निर्धारण 1500 बी.सी.ई. के आसपास) धूसर भांड प्रमुख हैं। चरण- II के लाल भांड और लघु फलक उद्योग इस चरण में भी जारी रहे। विभिन्न प्रकारों के नवपाषाण औज़ार भी इस चरण में पाए जाते हैं। ये इस बात का संकेत देते हैं कि खेती का काम अधिक किया जा रहा था और भोजन संग्रह तथा आखेट की अब गौण भूमिका रह गई थी।

बाद के दोनों चरणों की विशेषता नागार्जुन कोंडा में आवास गतों से लक्षित होती है जिनकी छतों को संभालने के लिए लकड़ी के लट्ठों का इस्तेमाल किया गया था। अन्य स्थलों पर नरकुल और मिट्टी के मकानों के अवशेष भी मिले हैं।

दक्षिण भारत के नवपाषाण कालीन किसानों द्वारा उगाई गई सबसे पहली फसलों में मिलेट (रागी) की फसल थी। इसकी खेती आज भी होती है और गरीब लोगों के भोजन का यह एक महत्वपूर्ण स्रोत है। यह मवेशियों के लिए चारे के रूप में भी इस्तेमाल की जाती है। सामान्यतः ऐसा विश्वास किया जाता है कि कृषीकृत रागी पूर्व अफ्रीका से आई। जंगली रागी, जो कृषीकृत रागी के साथ-साथ खरपतवार के रूप में उग जाती थी, कृषीकृत रागी की पूर्वज नहीं थी। लेकिन जंगली रागी पूर्वज परम्परा से अफ्रीकी किस्म से सम्बद्ध थी। दक्षिण भारत के नवपाषाण कालीन किसानों द्वारा जिन फसलों की खेती की जाती थी वे थीं- गेहूं, कुलथी, और मूंग। खजूर भी उगाई जाती थी। लगता है कि इस काल के दौरान सौपान-कृषि खेती की एक महत्वपूर्ण विशेषतास रही होगी। इसका उपयोग फसलें उगाने के लिए छोटे-छोटे खेत बनाने के लिए किया जाता था।

उत्खननों से प्राप्त पशुओं की हड्डियों के स्वरूप यह संकेत देते हैं कि पशुओं का उपयोग भार वहन करने के लिए अथवा भारी सामग्री खींचने के लिए तथा खेतों में हल चलाने के लिए किया जाता था। नागार्जुन कोंडा में किए गए उत्खननों से स्पष्ट है कि वनस्पति कृषीकरण पशुओं को पालने से पहले ही शुरू हो गया था। इन स्थलों से मवेशी, भेड़ और बकरी, भैंस, गधा, मुर्गी, सूअर और घोड़े जैसे पाले गए पशुओं की भी सूचना मिली है। सांभर मृग, बारहसिंगा, चित्तीदार मृग और चिकारा का शिकार किया जाता था तथा घोंघा और कछुए भोजन के लिए पकड़े जाते थे।

प्रचुर मात्रा में मवेशी और अन्य प्रकार की खाद्य वस्तुओं से संकेत मिलता है कि नवपाषाण कालीन लोगों की स्थाना बद्व कृषि तथा पशुचरण अर्थव्यवस्था थी। सी-14 तिथि निर्धारणों के आधार पर दक्षिण भारत की नवपाषाण संस्कृति का तिथि निर्धारण लगभग 2600 और 1000 बी.सी.ई. के बीच किया गया है।

उत्नूर, कोडेकाल और कुपगल जैसे नवपाषाण स्थलों के पास अनेक राख के टीले मिले हैं। इनमें से कुछ बस्तियों से दूर जंगलों में भी मिले हैं। सुझाया गया है कि यह राख के टीले नवपाषाण कालीन मवेशी बाड़ों के स्थल थे। समय-समय पर इकट्ठा हो गया गोबर या तो किसी संस्कार के रूप में अथवा दुर्घटनावश जलता रहा। अपेक्षाकृत अधिक दूरस्थ स्थानों पर पाए गए राख के ढेर इस बात का संकेत देते हैं कि लोग कुछ खास मौसमों में जंगलों के पशु-चारण स्थानों पर चले जाया करते थे।

4.6.7 ऊपरी मध्य और पश्चिमी दक्कन की नवपाषाण संस्कृति

कृष्णा और गोदावरी तथा उनकी सहायक नदियों के मध्य और ऊपरी विस्तारों में चित्र कुछ और ही है। इन क्षेत्रों में काले पाश पर बनाए गए घर्षित पत्थर के औज़ारों के अलावा बड़ी संख्या में समांतर पक्षीय फलक तथा गोमदे, केल्सेडोनी और इंद्र गोप मणि (सभी उपरत्न) के सूक्ष्म पाषाण धूसर भांडों और ताम्रपाषाण प्रकार के चित्रित मृद्भांडों के साथ मिले हैं। इस क्षेत्र से नवपाषाण चरण के कोई स्पष्ट अवशेष नहीं मिले हैं। लेकिन कृष्णा नदी की सहायक नदी भीमा पर चंदोली से प्राप्त साक्ष्य और गोदावरी की सहायक नदी प्रवरा पर नेवासा और दाइमाबाद स्थलों से प्राप्त साक्ष्य इस बात का संकेत देते हैं कि इस क्षेत्र में नवपाषाण किसान ताम्रपाषाण चरण में प्रवेश कर गए थे।

उत्तर महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और गुजरात की ताप्ती और नर्मदा घाटियों के उत्तर में और आगे नवपाषाण चरण के स्पष्ट अवशेष नहीं मिले हैं। केवल बीना घाटी में ऐरान स्थल पर और दक्षिण गुजरात में जोखा स्थल पर पाई गई दक्षिण भारत सादृश्य की नुकीले कुंदा सिरों वाली त्रिभुजाकार कुछ कुल्हाड़ियां ही इस क्षेत्र में नवपाषाण कालीन अवशेष है।

चम्बल, बनास और काली सिंध घाटियों में घर्षित पत्थर के औज़ारों की विद्यमानता का शायद

ही कोई प्रमाण हो। इस तथ्य के बावजूद कि प्रारंभिक मध्य पाषाण संदर्भ में पशु पालने का काम शुरू हो गया था, स्थानबद्ध बस्तियां इस क्षेत्र मे केवल तभी शुरू हुई जब ताम्र कांस्य उपकरण ज्ञात हुए।

बोध प्रश्न 4

1) उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में नवपाषाण संस्कृति की मुख्य विशेषता पर चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

2) निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है या गलत? (✓) या (✗) का चिह्न लगाइए।

i) यह कहा जा सकता है कि हड़प्पा निवासियों ने गेहूं, जौ और कपास की खेती का ज्ञान मेहरगढ़ के प्रारम्भिक निवासियों से प्राप्त किया था। ( )

ii) गुफराल में कृषीकृत वनस्पति और पालतू जानवरों के कोई साक्ष्य नहीं मिलते। ( )

iii) बेलान घाटी स्थलों पर उत्खननों से हमें अन्न संग्रह से अन्न उत्पादन चरण में संक्रमण का स्वरूप निर्धारित करने में सहायता प्राप्त हुई है। ( )

iv) एकल संस्कृति स्थल का अर्थ है एक सांस्कृतिक स्थल में विभिन्न संस्कृतियों का सम्मिलन। ( )

v) दक्षिण भारत में सबसे पहले जो फसल उगाई गई थी वह थी मिलेट (रागी)। ( )

vi) कछार पहाड़ियों में हुए उत्खननों से नवपाषाण संस्कृति के कोई अवशेष नहीं मिले हैं। ( )

3) मृद्भांड, घर्षित पत्थर के औज़ार और कच्चे मकानों के अवशेष मानव समाज के विकास के सम्बन्ध में क्या संकेत देते हैं?

....

....

....

....

....

4.7 सारांश

शिकारी/संग्रहकर्ता प्रागैतिहासिक समुदायों का अध्ययन पुरातात्विक अवशेषों पर आधारित है। इस अध्ययन में मानवशास्त्रीय सिद्धांत सहायता प्रदान करते हैं। सामाजिक विकास के क्रम में पुरापाषाण और मध्य पाषाण युग शिकारी/संग्रहकर्ता अवस्था का प्रतिनिधित्व करते

हैं। जलवायु में हुए परिवर्तन और पत्थर के औज़ारों की प्रकृति के आधार पर पुरापाषाण संस्कृति को तीन अवस्थाओं में विभक्त किया जा सकता है। आरंभिक पुरापाषाण के औज़ार हाथ की कुल्हाड़ियां, चीरने और काटने के औज़ार हैं। मध्य पुरापाषाण युग के मुख्य औज़ार परत हैं। उच्च पुरापाषाण संस्कृति के मुख्य औज़ार तक्षणी और खुरचनी हैं। मध्य पाषाण युग लगभग 8000 बी.सी.ई. से शुरू होता है। इस युग में जलवायु में परिवर्तन हुए। इस दौरान सूक्ष्म औज़ार और छोटे पत्थर के औज़ार बनाने की दिशा में तकनीकी विकास भी हुए। मध्यपाषाण औज़ारों में ब्लेड, कोर, नुकीले औज़ार, त्रिकोणीय औज़ार और नवचंद्राकार औज़ार मुख्य हैं।

जीव जन्तुओं के अवशेषों से भी पुरापाषाण और मध्य पाषाण युग के लोगों के जीवन यापन के बारे में काफी जानकारी मिलती है। पुरापाषाण युग में लोग मुख्यतः शिकारी/संग्रहकर्ता थे। ये लोग बड़े और छोटे आकार के पशुओं जैसे हाथी, बैल, नीलगाय, हिरण, जंगली भालू और कई प्रकार के पक्षियों का शिकार करते थे। इसके अतिरिक्त ये फल, बीज आदि का भी आहार के रूप में प्रयोग करते थे। मध्य पाषाण युग में भी मनुष्य शिकारी/संग्रहकर्ता ही था। हालांकि कुछ नये जानवर जैसे जंगली बकरा, लोमड़ी आदि भी इस काल में पाए जाते थे। पुरापाषाण युग और मध्य पाषाण युग का शिकार प्रवृति में एक मूलभूत अन्तर है। पुरापाषाण युग में लोग बड़े जानवरों का शिकार करते थे जबकि मध्य पाषाण युग में छोटे जानवरों का भी शिकार किया जाने लगा और मछलियाँ मारी जाने लगीं। प्रागैतिहासिक काल की चित्रकला उस युग के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर प्रकाश डालती है।

इस इकाई से आपको उस चरण के मूल लक्षणों की जानकारी भी प्राप्त हुई है जिसकी विशेषता है वनस्पति कृषीकरण और पशुओं को पालने में संक्रमण/आखेट/संग्रहण से खेती में संक्रमण से अनेक परिवर्तन आए। सामान्य शब्दों में, इनमें मृद्भांडों को बढ़िया बनाना, क्योंकि इन भांडों की अन्न संग्रह के लिए भी आवश्यकता थी और उनसे संसाधित भोजन खाने के लिए भी आवश्यकता थी, परिष्कृत औज़ार जो घर्षित थे और कृषि कार्यों के लिए कारगर थे, व्यवस्थित ग्राम समुदाय आदि शामिल थे।

आधुनिक साक्ष्यों से संकेत मिलता है कि सबसे पहले खेती का काम नील घाटी में शुरू हुआ और पश्चिम एशिया में यह कार्य बाद में हुए। कुछ क्षेत्रों में खेती और जानवरों को पालने का काम साथ-साथ हुआ, जबकि कुछ क्षेत्रों में खेती का काम जानवरों को पालने के कार्य से पहले शुरू हुआ।

इस इकाई में आप उन भौगोलिक क्षेत्रों से भी परिचित हुए हैं जिन क्षेत्रों में भारतीय उपमहाद्वीप में नवपाषाण कालीन संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इन क्षेत्रों में नवपाषाण संस्कृतियों का उदय भिन्न-भिन्न समयों में हुआ और उनकी अवधि भी अलग-अलग थी। उपमहाद्वीप के भीतर ही पारस्थितिक अन्तरों के कारण उगाई जाने वाली फसलें भी अलग-अलग थीं। पुरातत्वविदों ने विभिन्न प्राचीन स्थलों पर व्यापक उत्खननों से नवपाषाण संस्कृतियों के आविर्भाव और उनमें अन्तरों पर भी प्रकाश डाला है।

4.8 शब्दावली

एश्यूलियन (Acheulion) : यह एक प्रकार की हाथ की कुल्हाड़ी है। ये कुल्हाड़ियां आरंभिक हिम युग के दिनों की हैं, ये सबसे पहले फ्रांस में पायी गयी हैं।

शिल्प अवशेष : कोई ऐसी वस्तु जो मनुष्य द्वारा बनाई तथा उपयोग में लाई जाए। इसके अन्तर्गत अपरिष्कृत पत्थर से

लेकर आधुनिक तकनीक से बनी कोई भी वस्तु शामिल हो सकती है।

संकलन	:	विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का समुच्चय जिनका आपस में अंतसम्बंध हो। जब वह संकलन अनेक बार पाया जाता है और मानव गतिविधि का पूर्ण रूप से विवरण देता है तब उसे संस्कृति कहते हैं।
व्यासमापन	:	रेडियों कार्बन तिथि अंकन में इस शब्द का इस्तेमाल किया जाता है।
अवतल	:	अन्दर की तरफ धंसा हुआ बीच की परत किनारे की परत से पतली।
उत्तल	:	बाहर की तरफ उठा हुआ और बीच का भाग किनारे की अपेक्षा मोटा।
मानवजाति वर्णन	:	इसमें संस्कृतियों का विस्तृत वर्णन पाया जाता है।
पारिस्थितिकी	:	पशु जीवन और पौधों के जीवन का अंतर्सम्बन्ध।
पुरालेखशास्त्र	:	इसमें शिलालेखों का अध्ययन किया जाता है।
वनस्पति	:	इस विज्ञान के अंतर्गत पौधों के जीवन का अध्ययन किया जाता है।
जीव-जंतु विज्ञान	:	इसमें पशुओं के जीवन का अध्ययन होता है।
भू-विज्ञान	:	इसमें पृथ्वी की बनावट, संरचना और इतिहास का अध्ययन होता है।
हिमाच्छादन	:	ठंडी जलवायु का काल जिसमें बर्फ की मात्रा अधिक थी। कई हिमाच्छादन मिलकर एक हिम-युग बनाते हैं।
स्तनधारी	:	ऐसे जानवर जो अपने बच्चों को स्तनपान कराते हैं।
मुद्राशास्त्र	:	इसमें मुद्रा का अध्ययन किया जाता है।
पराम विश्लेषण	:	इस तकनीक का उपयोग कालक्रम स्थापित करने के लिए किया जाता है। इसमें फूलों के पराम का विश्लेषण किया जाता है।
नर वानर	:	स्तनधारी जीव (मानव, बंदर, लंगूर आदि)।
आयत	:	समकोण चतुर्भुज।
सरल रेखीय	:	जिसमें सीधी रेखा हो।
रेडियो कार्बन	:	ऐसी विधि जिसके द्वारा 70,000 वर्ष तक पुरानी कार्बनिक वस्तु के काल का पता लगाया जा सकता है। पौधे और अन्य जीव अपने जीवन काल में वातावरण से कार्बन ग्रहण करते हैं। इसमें कार्बन 14

(14सी) भी रहता है जो रेडियोधर्मी तत्व है। पौधों और जीवों के मरने के बाद इस कार्बन की मात्रा कम होने लगती है। इस प्रकार कार्बन की मात्रा से अवशेषों की पुरातनता का पता चल जाता है।

अनुप्रस्थ : चौड़ाई के मुताबिक।

कगार : नदी के किनारों के आसपास की ज़मीन

शिकारी/संग्रहक : मानव विकास की वह अवस्था जब मनुष्य अपना भोजन शिकार करके अथवा जंगलों से कंद-मूल इकट्ठा करके प्राप्त करता था।

अनुपुरापाषाण काल : मानव द्वारा पत्थर के औज़ारों के प्रयोग का प्रारंभिक काल।

मृद्भांड : मिट्टी के बर्तन।

प्रारंभिक कृषि : मानव द्वारा जंगली पौधों का स्वयं कृषि द्वारा उत्पादन आरम्भ करना।

प्रारंभिक प्राचीन कृषक : वह मानव समूह जिन्होंने सबसे पहले कृषि करना शुरू किया।

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) ग 2) घ 3) क 4) घ 5) घ

बोध प्रश्न 2

1) ग 2) घ 3) ग

4) इस प्रश्न का उतर देने की प्रक्रिया में आपको अपनी कल्पना का सहारा लेना होगा और आपको समझना होगा कि किस प्रकार दीवारों पर बने चित्र तत्कालीन जीवन को प्रतिबिम्बित करते हैं। उदाहरणस्वरूप एक चित्र जिसमें कुछ लोग मिलकर जानवर का शिकार कर रहे हैं, इससे छोटे सामाजिक समुदायों की स्थापना के विषय में पता चलता है। इससे उनकी आहार प्रवृति और औज़ारों के प्रकार का भी पता लगाया जा सकता है।

बोध प्रश्न 3

1) आपके उत्तर में ये शामिल होने चाहिए:

   गेहूं, जौ आदि की खेती के माध्यम से आखेटक/संग्राहक से अन्न उत्पादन विधि में परिवर्तन, व्यवस्थित ग्राम जीवन, पत्थर के औज़ार बनाने में प्रगति, मृद्भांड की शुरुआत आदि। देखें उप-भाग 4.4.1।

2) ये थीं – वनस्पति कृषीकरण और जानवर पालने का काम आवश्यक तौर पर अंतः सम्बद्ध नहीं थे; अन्न उत्पादन का कार्य संभवतः नवपाषाण संस्कृति से पहले शुरू हो गया था, आदि। देखें उप-भाग 4.5.1।

3) i) आत्मनिर्भर, ii) घर्षित पत्थर, iii) कच्ची किलेबंदी,
iv) बड़ा, तुर्की

बोध प्रश्न 4

1) देखें उप-भाग 4.6.1।

2) i) ✓, ii) ✗, iii) ✓, iv) ✗, v) ✓, iv) ✗

3) इसका उत्तर देने के लिए आपको अपनी कल्पना शक्ति का सहारा लेना होगा। ये सभी उस प्रक्रिया का संकेत करते हैं। जिसके दौरान मानव सरल समाजों से जटिल समाजों की ओर बढ़ रहा था; श्रम का विभाजन, प्रौद्योगिकी में विकास, आवश्यकता पर आधारित अन्वेषण आदि आपके उत्तर के लिए कुछ संकेत हैं।

4.10 संदर्भ ग्रंथ

ऑलचिन, ब्रिज्रेट तथा रेमण्ड (1988) *द राइज़ ऑफ सिविलाइज़ेशन इन इंडिया एण्ड पाकिस्तान* (इंडियन एडिशन), सेलेक्ट बुक सर्विस, नई दिल्ली।

मलिक, एस.सी. (1968) *इंडियन सिविलाइज़ेशन : द फॉरमेटिव पीरियड,* इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़, शिमला।

साहू, एच.पी. (1988) *फ्रॉम हंटर्स टू ब्रीडर्स,* अनामिका प्रकाशन, दिल्ली।

संकालिया, एच.डी. (1962) *प्रीहिस्टरी एण्ड प्रोटोहिस्टरी इन इंडिया एण्ड पाकिस्तान,* यूनिवर्सिटी ऑफ बॉम्बे।